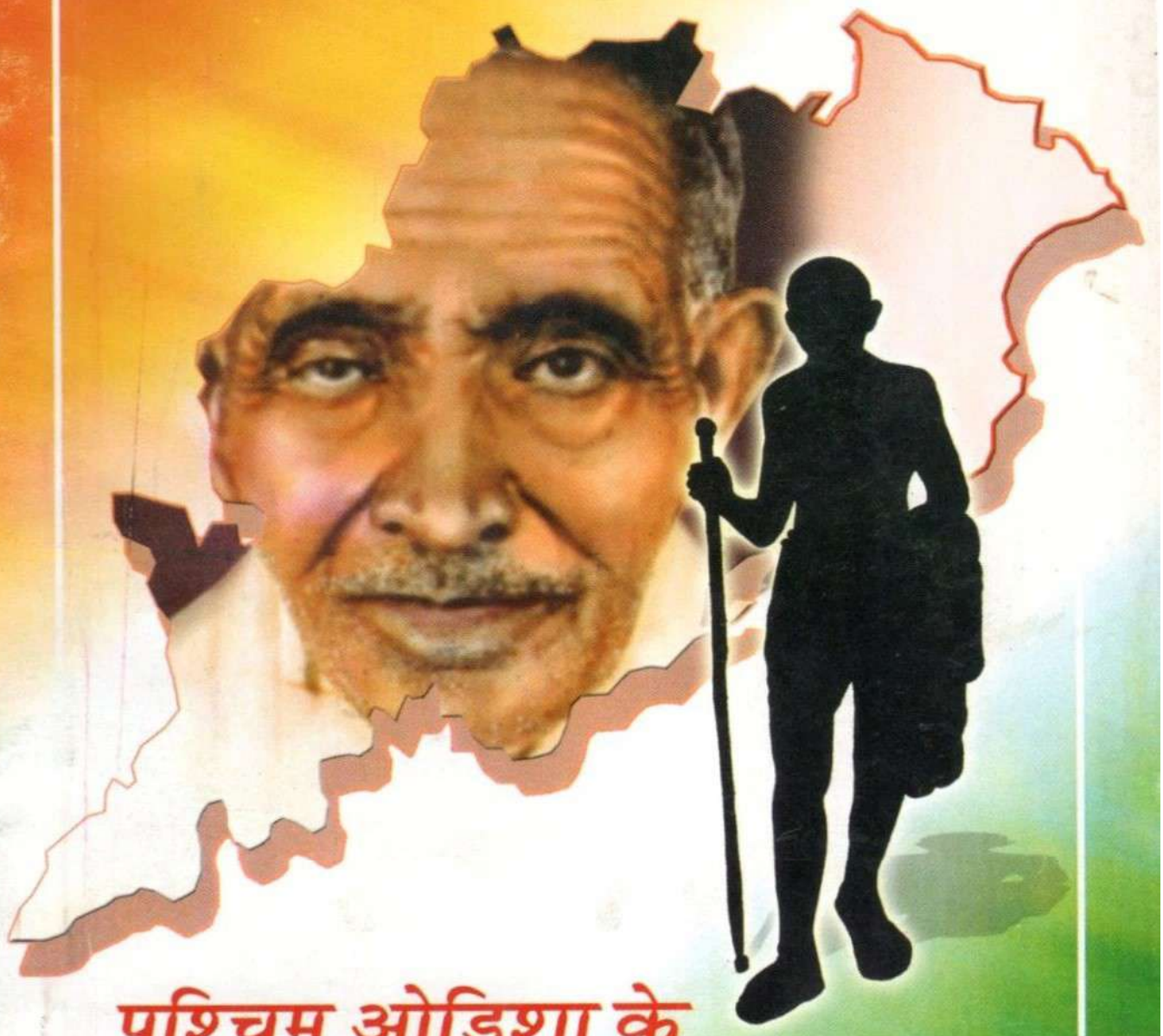

पश्चिम ओड़िशा के महात्मा गांधी नृसिंह गुरु

डॉ. बलराम दास

पश्चिम ओड़िशा के महात्मा गांधी

नृसिंह गुरु

- लेखक -

डा. बलराम दास

- प्रकाशक -

हेमन्त कुमार महापात्र

सचिव, नृसिंह गुरु स्मृति समिति

प्रकाशक
नृसिंह गुरु स्मृति समिति
मुदीपाड़ा, सम्बलपुर- 768002

डीटीपी
दाशरथी बेहेरा, मालीपड़ा, फाटक, सम्बलपुर

आवरण पृष्ठ
गौरांग मित्र, गैलेक्सि कंप्युटर्स, सम्बलपुर

मुद्रक
इम्प्रेशन, सम्बलपुर

संस्करण
प्रथम (2005)

मूल्य- 60/-

PASCHIM ODDISA KE MAHATMA GANDHI NRUSINGHA GURU
by
Dr.Balaram Dash

प्राक्कथन

सन् 1977, जुलाई 5 से 9 अक्तूबर 1982 तक मैं गंगाधर मेहेर महाविद्यालय सम्बलपुर में हिन्दी अध्यापक के रूप में कार्य करता रहा। उस अवधि में कई बार विभिन्न सभा समितियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नृसिंह गुरु से मेरा साक्षात्कार होता था। मैंने प्रत्यक्ष रूप से महात्मा गांधी के तो दर्शन नहीं किए, पर नृसिंह गुरु को देखकर ऐसा लगता था कि इतने सरल, दृढ़प्रतिज्ञ, निरहंकारी, निराडंबर व्यक्ति संसार में क्वचित परिलक्षित होते हैं। महत्मा गांधी और विनोवा भावे के अतिरिक्त पश्चिम ओड़िशा में गुरु के समान कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। उनकी वेशभूषा, चाल-चलन, कर्त्तव्य निष्ठा, तपस्वी की भाँति ईश्वरानुराग, सेवापरायणता आदि देखकर कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। कईबार व्यक्तिगत साक्षात्कार से वे अपने जीवन और कार्य की सूचना देते हुए तत्कालीन अर्थात् स्वाधीनता के परवर्ती भारतवर्ष की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक दशा इत्यादि के विषय में क्षोभ प्रकट करते थे, क्योंकि देश स्वाधीन होने के उपरांत जो खुशहाली आनी चाहिए थी वह नहीं आ पायी। राजनीतिक विडंबना से हम जैसे यथार्थ स्वाधीनता से वंचित हो गये हैं। कौलिक वृत्ति और कुटीर शिल्प की अधोगति, जातिगत भेदभाव के अमानवीय दृष्टिकोण, पाश्चात्याभिमुखी भौतिक चिंता, आत्मसमीक्षा का अभाव आदि घटनाएँ उन्हें बहुत कचोटती थीं। उनके कल्पित गांधी के रामराज्य का आदर्श जैसे क्षुण्ण हो रहा था, उससे दु:खी होना भी स्वाभाविक था। इतने पर भी वे किसी भी स्थिति में बदले नहीं, अपने आदर्श से तनिक भी विचलित नहीं हुए।

संयोगवशत: मैं ब्रह्मपुर और राउरकेला में कुछ साल अध्यापना करके पुनर्बार नौ जनवरी 1997 को गंगाधर मेहेर स्वयंशासित महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में आया । 2003 ई. को नृसिंह गुरु की शतवार्षिक जयंती समिति ने कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए । विशेष रूप से इस दिशा में उनके नाती श्री हेमन्त कुमार महापात्र का उद्यम सराहनीय रहा है ।

अंग्रेजी और ओड़िआ में श्री गुरु से संबंधित स्मरणिकाएँ एवं कई पुस्तकें भी छपीं । (1) Nrusingha Guru, The freedom fighter. By Prof. Chittaranjan Mishra (2) संबलपुरे का स्वाधीनता संग्राम और नृसिंह गुरुंक भूमिका - डॉ.यज्ञ कुमार साहु) राज्य जनशिक्षा संस्थान की ओर से उनके जीवन, कार्य और व्यक्तित्व को लेकर एक छोटी सी पुस्तक भी प्रकाशित हुई है।

डॉ. निरंजन पति ने ''श्री नृसिंह गुरु शतकम्'' नामक सौ श्लोकों से युक्त एक पुस्तक लिखी । इसी पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर सम्बलपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति तथा विशिष्ट शिक्षाविद् डॉ. प्रफुल्ल कुमार पति ने हिन्दी में भी एक पुस्तक छपाने का आग्रह किया और लिखने का दायित्व मुझे सौंपा । उपर्युक्त पुस्तकों को उपजीव्य मानकर मैंने यह क्षुद्र पुस्तक प्रस्तुत किया है । आशा है इससे गांधीवादी व्यक्तित्व से प्रभावित हिन्दी भाषी लोग भी इस महान व्यक्ति से प्रेरणा ले सकेंगे ।

बलराम दास

तारीख : 31.12.2003

प्रकाशक की कलम से....

इतिहासकारों ने अब तक भारत के स्वाधीनता संग्राम में पश्चिम ओड़िशा की भूमिका को उचित स्थान नहीं दिया है । इस कारण स्वाधीनता संग्राम में इस अंचल के लोगों की भूमिका अब तक जनमानस के सामने सही ढंग से नहीं आ पाया है । इस अंचल के माटीपुत्र स्वाधीनता संग्रामी स्वर्गीय नृसिंह गुरु की 2002-2003 में जन्म शतवार्षिकी पालन के समय उन पर पुस्तक प्रकाशित करने कुछ लोगों ने सुझाव दिया । इससे पहले राज्य जनशिक्षा संगठन की ओर से नृसिंह गुरु पर एक छोटी सी पुस्तक प्रकाशित किया गया था । उनके निधन के बाद सम्बलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार पति की अध्यक्षता में नृसिंह गुरु स्मृति समिति का गठन किया गया । समिति की ओर से हर साल जयंती एवं श्राद्ध सभा का आयोजन किया जा रहा है । इसमें विशिष्ट लोगों को शामिल किए जाने से धीरे धीरे नृसिंह गुरु के बारे में नए नए तथ्य सामने आए । इसके साथ ही समय समय पर समिति की ओर से स्मरणिका का भी प्रकाशन किया जाता रहा है । इसमें उनके संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों के लेखों को शामिल किया गया। सम्बलपुर विश्वविद्यालय की ओर से इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ. चित्तरंजन मिश्र द्वारा रचित "NRUSINGHA GURU -THE FREEDOM FIGHTER" का प्रकाशन किया गया है । स्मृति समिति की ओर से प्रख्यात इतिहासकार डॉ. यज्ञ कुमार साहू द्वारा ओड़िया भाषा में रचित ''सम्बलपुर में स्वाधीनता संग्राम ओ नृसिंह गुरुंक भूमिका'' पुस्तक का प्रकाशन किया गया है ।

गंगाधर मेहेर महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यापक डॉ. निरंजन पति द्वारा संस्कृत भाषा में रचित एवं जन्म शतवार्षिकी समिति द्वारा प्रकाशित ''नृसिंह स्मृति शतकम्'' पुस्तक के लोकार्पण समारोह के मुख्य

अतिथि तत्कालीन उत्तरांचल पुलिस उपमहानिर्देशक श्री सत्यजीत महांति ने नृसिंह गुरु पैर हिन्दी भाषा में पुस्तक प्रकाशित करने का प्रस्ताव दिया था । उन्होंने कहा था कि हिन्दी भाषा में पुस्तक प्रकाशित होने से नृसिंह गुरु की ख्याति ओड़िशा से बाहर भी पहुँच पाएगी । समारोह में उपस्थित विशिष्ट व्यक्तियों सहित स्मृति समिति के सदस्यों ने भी श्री महांति के प्रस्ताव का स्वागत किया था । समारोह में पुस्तक समीक्षक के रूप में शामिल डॉ. बलराम दास को नृसिंह गुरु पर हिन्दी भाषा में पुस्तक रचना करने का दायित्व सौंपा गया । डॉ. बलराम दास ने इस प्रस्ताव का सम्मान करते हुए सहर्ष इस कार्य को करने अपनी सहमति दे दी । डॉ. दास कई बार नृसिंह गुरु के संपर्क में आए थे । नृसिंह गुरु के जीवन से जुड़ी कई घटनाओं की जानकारी उन्हें होने के कारण इस पुस्तक को लिखते समय बहुत सहायता मिली । स्मृति समिति के वरीष्ठ सदस्य तथा सेवानिवृत्त शिक्षा विभाग के अधिकारी श्री अरविंद महापात्र ने डॉ. दास को कुछ सामग्रियाँ भी उपलब्ध कराया था । पुस्तक लिखने का कार्य समाप्त होने के बाद प्रज्ञा सिस्टम एंड सॉफ्टवेयर को डीटीपी के लिए दिया गया । सम्बलपुर में अनुभवी हिन्दी के टंकक नहीं मिलने के कारण कुछ त्रुटियाँ रह गई थी । इसके बाद लेखक डॉ. दास की सलाह पर हिन्दी दैनिक ''नवभारत'' में कार्यरत श्री दाशरथी बेहेरा को त्रुटि सुधारने सहित डीटीपी कार्य के लिए अनुरोध किया गया था । उन्होंने तुरंत इस कार्य में सहायता करने अपनी सहमति दे दी। इसके लिए स्मृति समिति उनका आभारी है । नई पीढ़ी को नृसिंह गुरु के बारे में जानने एवं समझने के लिए पुस्तक में दिए गए तथ्य सहायक होंगे, साथ ही पाठकों को पसंद भी आएगा।

हेमन्त कुमार महापात्र
सचिव, नृसिंह गुरु स्मृति समिति

नृसिंह गुरु एवं पुस्तक पर डॉ. प्रफुल्ल कुमार पति के विचार

मैं बचपन से श्री नृसिंह गुरु को जानता हूँ । लोगों के मुख से उनके जीवन चरित सुनकर मुझे प्रेरणा मिली । जब ''नृसिंह गुरु स्मृति समिति'' के सदस्य विशेष रूप से सचिव श्री हेमन्त कुमार महापात्र ने इसके अध्यक्ष पद सम्भालने का अनुरोध किया तो मैंने इसे अपना सौभाग्य समझा और तुरंत ही इस पर अपनी सहमति दे दी । मैं अपने जीवन में विशेष कुछ नहीं कर पाया । जो कुछ भी कर पाया हूँ उसमें से इस स्मृति समिति के अध्यक्ष का कार्य करना मेरे जीवन में उल्लेखनीय घटना है । श्री गुरु को ओड़िशा के सभी क्षेत्र के लोग जाने पहचाने एवं उनके गांधीवादी विचारधारा ओड़िशा में प्रसारित हो का लक्ष्य लेकर समिति की ओर से ब्रह्मपुर से लेकर राउरकेला एवं कालाहांडी से लेकर देवगढ़ तक सभी महत्वपूर्ण स्थलों पर नृसिंह गुरु की जन्म शतवार्षिकी का पालन किया गया । समिति के सदस्य सभी समारोह में पहुँचकर श्री नृसिंह गुरु की जीवनी और विचारधारा की चर्चा कर उनके जीवन चरित एवं क्रियाकलाप की जानकारी शिक्षित समाज एवं उपस्थित आमजनता को दी । इस कार्य में स्थानीय आयोजकों एवं प्रशासनिक अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिला । हमें गर्व है कि हम श्री गुरु की जीवनी से विशेषकर युवा समाज को प्रेरणा लेने प्रोत्साहित कर पाए । मेरे विचार में हमारा अभियान सफल हुआ है । हमारा निवेदन स्वीकार कर सम्बलपुर विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डॉ. माधवचंद्र दाश ने विश्वविद्यालय की ओर से इतिहास विभाग के सेवानिवृत्त अध्यापक डॉ. चित्तरंजन मिश्र द्वारा रचित अंग्रेजा में ''Nrusingha Guru-the freedom fighter'' पुस्तक प्रकाशित

करवाया । इससे भी हमारी आकांक्षाएं पूर्ण नहीं हुई । मैंने छोटी कक्षाओं के छात्र-छात्राओं को नृसिंह गुरु की जीवनी से परिचय कराने ओड़िया में पुस्तक प्रकाशित करने का प्रस्ताव समिति के सदस्यों को दिया । श्री महापात्र ने इसे भी पूरा कर दिखाया । हमारा अनुरोध स्वीकार कर इतिहास विभाग के सेवानिवृत्त अध्यापक डॉ. यज्ञ कुमार साहू ने ''सम्बलपुरे स्वाधीनता संग्राम ओ नृसिंह गुरुकं भूमिका'' पुस्तक की रचना की। इसके लिए समिति व ओड़िया पाठक उनका आभारी हैं । श्री नृसिंह गुरु पर अंग्रेजी एवं ओड़िया में दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है । इसमें में भी हमारा मन भरा नहीं । देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है । देश की अधिकांश जनता हिन्दी समझती है और पढ़ती है । इसलिए मैंने नृसिंह गुरु पर हिन्दी भाषा में एक पुस्तक प्रकाशित करने की इच्छा जाहिर की । इसे भी श्री महापात्र ने पूरा कर दिखाया । इस कार्य को करने गंगाधर मेहेर स्वयंशासित महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. बलराम दास द्वारा सहमति देने सहित बहुत जल्द पुस्तक को आकार देने के लिए समिति उनके प्रति आभारी है । प्रख्यात फारसी इतिहासकार Taine ने कहा है कि वह सही में इतिहास है, जिसमें man, milieu and moment का समन्वय हो एवं इसे स्थापित करनेवाला इतिहासकार। मैं खुश हूँ कि डॉ. दास ने इसमें तीनों का समन्वय स्थापित किया है । स्वाधीनता से पहले भारत वर्ष में गांधी जी के आदर्श का स्वर्णिम काल था। श्री गुरु ने ओड़िशा में गांधी जी के आदर्श को स्थापित करने में जो भूमिका निभाई उसे लोगों के सामने लाने में डॉ. दास ने सराहनीय कार्य किया है । अंग्रेजी दार्शनिक एवं इतिहासकार Carlyle ने कहा है कि, इतिहास उन बड़े लोगों की जीवनी का समन्वय है, जो अपने कार्य द्वारा मनुष्य के विकास में सहायक हुए हैं । यह कथन गांधीजी के लिए शत प्रतिशत फीट बैठता

है । उन्होंने लीक से हटकर अहिंसा आंदोलन के माध्यम से भारत को स्वाधीन कराया था । इसबारे में किसी ने सोचा भी नहीं था। इससे बढ़कर एक और अहं बात यह है कि गांधीजी का दर्शन मानव सभ्यता के विकास में एक नई परंपरा की नींव ड़ाली थी । शत्रु को प्यार करना, झूठ नहीं बोलना एवं सत्य के मार्ग पर शत्रु के हृदय पर विजय प्राप्त करना जैसे संदेश के माध्यम से गांधी जी ने भगवान की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि मनुष्य के लिए एक नया द्वार खोल दिया । श्री नृसिंह गुरु यद्यपि गांधीजी के आदर्श एवं विचारधारा के शीर्ष तक पहुंच नहीं पाए हैं फिर भी नृसिंह गुरु ने गांधीजी को दिल से अपना गुरु मानकर ध्रुव की तरह अटल होकर उनके आदर्श का अनुकरण किया था । भारत एवं संसार में गांधीजी के अनुगामियों की संख्या बहुत है । जीवन के समस्त स्वार्थ को गांधी जी के सामने समर्पित कर कष्टों को अपनाने के लिए सदा तत्पर होकर श्रद्धा एवं भक्ति के साथ गांधीजी के आदर्श को अनुकरण करना उनका शिष्य बनने की कसौटी है तो, मैं कहुँगा कि उनमें श्री नृसिंह गुरु सबसे पहले नंबर पर आएंगे । डॉ. दास ने नृसिंह गुरु के जीवन के यह समस्त भाव एवं विभाव सहज एवं सरल भाषा में लिखा है । इसलिए मैं निश्चित रूप से कहूँगा कि यह पुस्तक सभी पाठकों के हृदय को स्पर्श करेगा । स्मृति समिति के सदस्य खुश हैं कि हम हिन्दी पाठकों को एक पुस्तक उपहार देने में सक्षम हुए हैं ।

डॉ. प्रफुल्ल कुमार पति
पूर्व कुलपति, सम्बलपुर विश्वविद्यालय
अध्यक्ष, नृसिंह गुरु स्मृति समिति,
सम्बलपुर

पुस्तक पर प्रो.आदित्य प्रसाद पाढ़ी के विचार

डॉ.बलराम दास ने सम्बलपुर के जानेमाने स्वाधीनता सेनानी नृसिंह गुरु के जीवन परिचय, स्वाधीनता संग्राम एवं स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश गठन में उनकी भूमिका, समाज संस्कार कार्यक्रम एवं निस्वार्थ कर्ममय जीवन पर प्रकाश डाला है । इसलिए मैं तहेदिल से उनका धन्यवाद करता हूँ और कामना करता हूँ कि यह लोगों को पसंद आएगा ।

नृसिंह गुरु का आदर्श ओड़िया जाति को प्रेरणा दे, संकट के समय उन्हें बल मिले एवं विकास के मार्ग को प्रकाश से भर दे ।

सम्बलपुर के माटीपुत्र नृसिंह गुरु की सम्बलपुर एवं ओड़िया जाति के प्रति देन स्मरणीय है । एक नैष्ठिक ब्राह्मण कुल में जन्मे नृसिंह गुरु ने हमेशा दलितों की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया था । वे दूसरों को भी इसमें सहयोग करने उत्साहित किया करते थे । उनका कार्य क्षेत्र सीमित नहीं था फिर भी वे धीर, स्थिर एवं एक समाज सुधारक के रूप में विरल व्यक्तित्व के धनी थे । किसी भी बात पर किसी को कभी दोषी नहीं मानते थे और ना ही किसी की निंदा करते थे । दु:ख, पीडा, क्षति सहकर भी विनम्र, सहनशील, स्नेही, सत्य बोलनेवाले उदार एवं निष्पक्ष विचार करनेवाले थे।

उन्होंने जो त्याग किया है वह स्मरणीय है । समाज एवं संस्कृति के प्रति जागरूक पत्रकार के रूप में ओड़िआ संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है । नृसिंह गुरु ने छुआछूत मिटाने एवं साक्षरता अभियान आदि जनकल्याण कार्य के लिए अपने जीवन को उत्सर्ग किया था ।

गांधी ने एकबार कहा था, ''मैं एक हरिजन की सेवाकर गदगद हो गया । जो सेवा के लिए अपने जीवन को उत्सर्ग कर देता है उसका जीवन लांछित एवं शोषित होता है ।'' नृसिंह गुरु ने गांधी जी के आदर्श से प्रेरित होकर अपने जीवन को दलितों की सेवा में उत्सर्ग कर दिया था । वे अमर

हैं । नृसिंह गुरु जन्म शतवार्षिकी समिति उनकी प्रतिभा को पूरे ओड़िशा में विभिन्न समारोह एवं लेखों के माध्यम से प्रचार एवं प्रसार करने से धन्यवाद के योग्य है । नृसिंह गुरु स्मृति समिति ने यह पुस्तक प्रकाशन कर अपनी राष्ट्रीय जिम्मेदारी का निर्वाह किया है।

प्रो.आदित्य प्रसाद पाढ़ी
पूर्व कुलपति
ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय

नृसिंह गुरु का वैशिष्ट्य

अनन्त ब्रह्मांड में चौरासी लाख योनियों में मनुष्य श्रेष्ठप्राणी माना गया है । मनुष्यों में भी गुण और कर्मो के आधार पर विभिन्न स्तर हैं। कुछ ऐसे महामानव होते हैं जो अपने गुणों तथा कार्यों के द्वारा युग-युग के लिए आदर्श बन जाते हैं । कहा जाता है जो यशस्वी होता है वह हमेशा जीवित रहता है, ऐसे ही यशस्वी व्यक्तियों में अन्यतम थे नृसिंह गुरु । महान व्यक्तियों को समाज महात्मा, युग पुरुष, महामानव आदि अनेक विशेषणों से याद करता है । गगन के ताराओं की भाँति वे सदैव अंधेरे में चमकते रहते हैं । हमारे सप्तऋषि, ध्रुव आदि सदैव स्मरणीय रहेंगे । इसी उद्देश्य से आज भी गगन में वे विद्यमान हैं । अगणित महान व्यक्तियों में अनन्त विभूतियाँ देखी जाती है । वे अपने - अपने क्षेत्र के लिए आदर्श तथा प्रेरणा के प्रतीक बन जाते हैं ।

इस परिप्रेक्ष्य में संबलपुर जिले के विशिष्ट स्वाधीनता सैनिक नृसिंह गुरु का नाम हमारे युवावर्ग के लिए प्रेरणा दायक माना जाएगा । छात्रावस्था में ही उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए अपने जीवन को समर्पित कर

दिया था । 1921 से लेकर देश की स्वाधीनता प्राप्ति तक स्वातंत्र्य आंदोलन में वे संपृक्त थे । विशेषत: मोहन दास करमचंद गांधी के आदर्श से वे अनुप्राणित थे ।

वे लवण-सत्याग्रह, दलित उद्धार अस्पृश्यता दूरीकरण, जनसेवा, स्वदेशी-भावना आदि से प्रत्यक्ष रूप में जड़ित थे। मूलत: वे एक संवाददाता और कृषक थे । स्वाधीनता आंदोलन में योग देकर बहुत-से देशप्रेमी बंदी बनाए गए थे, उनमें से नृसिंह गुरु भी उल्लेखनीय रहे हैं । उनके इस कार्य से और अनेक लोग भी प्रेरित हुए, यह बात ही उनके महत्व का परिचायक है । हरिजन और गिरिजनों के उद्धार के लिए उनका प्रयास सराहनीय माना जाएगा । सूतकातना, खादी वस्त्र पहनना, निराडम्बर जीवन यापन करना आदि कार्यों से गांधीयुग के वे थे एक आदर्श मानव । राष्ट्रीय भावना तथा देशप्रेम के विकास के लिए उन्होंने जो कार्य किया था, राष्ट्रीयस्तर पर उसका प्रचार-प्रसार नहीं हो पाया है । भारत वर्ष के विशाल भूखंड में एक अंचल का महत्व अपने आप में महत्वपूर्ण रहा है, उसकी उपेक्षा शरीर के एक अंग की उपेक्षा की तरह स्वीकार्य है।

उत्कल प्रांत का सम्बलपुर जिला कई ऐतिहासिक कारणों से स्मरणीय रहेगा । आधुनिक भारत के स्वाधीनता-आंदोलन के सैनिक चन्द्रशेखर बेहेरा ने स्वयं को देश के लिए न्योछावर किया था । नृसिंह गुरु उनके प्रिय पात्र थे । उनकी प्रेरणा से अपनी बीमार बेटी को मृत्यु मुख में छोड़कर वे जेल चले गये।

देश स्वाधीन हुआ फिर भी उन्होंने किसी विशिष्ट पद-पदवी, सरकारी सेवा के लिए आग्रह प्रकाश न करके पत्रकारिता कार्य के द्वारा

समाज की सेवा करते रहे । बड़ी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निष्पक्ष समाचार तैयार करने में उनका कम योगदान नहीं था । राजनैतिक दाँवपेंच, कूट-कपट से दूर उस प्रकार के निरलस देशभक्त, निस्वार्थ जनसेवक एवं उच्चमना, सरल जीवन यापन करनेवाले व्यक्तित्व विरले ही होते हैं । उनके जीवन और कार्य के संबंध में संक्षिप्त विचार प्रस्तुत करना इस क्षुद्र पुस्तक का उद्देश्य है ।

संबलपुर और स्वतंत्रता आंदोलन

ओड़िशा का सम्बलपुर जिला और शहर ओड़िआ भाषा, साहित्य और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में स्मरणीय रहा है । पश्चिम ओड़िशा का एक बहुत बड़ा अंचल प्राचीन काल से कोशल राज्य के नाम से परिचित था । कहा जाता है कि सम्राट अशोक से पराजित होकर महामेघबाहन कोशल राज्य में ही शरणागत थे । उस समय यह राज्य घने जंगल और नदियों से परिपूर्ण था । कलिंग युद्ध महाभारत युद्ध के बाद एक भयंकर युद्ध था, रक्त की नदी प्रवाहित हो गई थी । इस दृश्य से अशोक का हृदय-परिवर्तन हुआ । वह चण्डाशोक से धर्माशोक बन गया । कोशल राज्य उस कलिंग युद्ध का एक अंग था । कलिंग युद्ध से विरत होने पर कोशल के विरुद्ध अशोक ने युद्ध करने का प्रयास नहीं किया । 'ये निरीह वनवासी हैं; इन पर शस्त्र प्रयोग करना अनुचित है ।' यह सोचकर वह लौट गया।

ढेढ़ हजार वर्ष व्यतीत हुए हैं, जबकि दक्षिण कोशल का राजा ययाति केशरी ने उत्कल की राजधानी को अपने अधीन में ले लिया। परिणाम स्वरूप दोनों राज्य मिलकर एक वृहद राज्य बन गया । राजा ने बहुत-से उन्नति मूलक कार्य किए । पुरी के जगन्नाथ मंदिर का भा

उन्होंने संस्कार किया । भुवनेश्वरस्थ लिंगराज मंदिर का निर्माण किया। अनेक यज्ञ कार्यों के द्वारा एवं अपने सहयोग से कोशल तथा उत्कलीय सभ्यता-संस्कृति को समृद्ध किया । फलत: दोनों राज्यों के बीच तथा जनता के मध्य बंधुता का सेतु बन गया । एक ही प्रदेश के रूप में परिचित होने के बाद कई सौ वर्षों के उपरांत 1781 ईस्वी में ओड़िशा के इसी पश्चिमी हिस्से के अनेक अंचल मराठों के दखल में आ गये। 35 वर्ष तक उनका शासन रहा । इसके बाद अंग्रेजों ने इस अंचल का शासन किया ।

1848 ई॰ में ही सम्बलपुर अंग्रेजों का शासनाधीन हुआ । उसी समय स्वतंत्रताभिमानी वीर सुरेंद्र साए ने सम्बलपुर के राज सिंहासन के लिए दावेदारी जाहिर किया, किन्तु ब्रिटिश शासनाधिकारी इसे मानने के लिए तैयार नहीं थे । परिणाम स्वरूप सुरेंद्र साए लुक-छिपकर अंग्रेजी शासकों के विरुद्ध युद्ध करने लगे । भारत का प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम 1857 में आरंभ हुआ । 1858 में यह धीरे-धीरे धीमा होता गया । किन्तु विप्लवी वीर सुरेंद्र साए इस युद्ध को गति देते रहे । ''स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । पराधीनता सबसे बड़ा पाप है । अंग्रेजों के शासन से हमें मुक्त होना है, गुलामों की तरह हमें नहीं जीना है''। इसी प्रकार नारे प्राय: सारे भारतवर्ष में प्रचारित हो रहे थे । दैन्य छोड़कर साहस के साथ मातृभूमि को पराधीनता के शिकंजे से मुक्त करने की भावना से जन-जन तक पहुँचाने का कार्य इस देश के नवयुवकों युवतियों को उद्‌बुद्ध किया जा रहा था। उससे भला सम्बलपुर कैसे अलग रह पाता? 1864 ई॰ में सुरेंद्र साए को बंदी बनाकर असुरगढ़ किले में भेज दिया गया। अतएव इस अंचल के अंग्रेजी शासक कुछ आश्वस्त हुए । किन्तु इस देश में सदैव शासन करने की उनकी भावना धीमी होने लगी।

ओड़िआ भाषा आंदोलन

सुरेंद्र साए की मातृभूमि के प्रति आत्मबल, साहस आदि को देखकर अंग्रेजों ने अनुभव किया था कि सम्बलपुर एक वीर प्रसविनी भूमि है । यहाँ के लोगों को सामान्य ढंग से दबाया नहीं जा सकता । इसलिये 'फूट डालो राज करो' की नीति सरकार ने अपनायी । 1862 में कानून बना दिया गया कि सम्बलपुर को मध्यप्रदेश से मिला दिया जाय । 1885 ईस्वी में यह भी कहा गया कि सम्बलपुर में सरकारी भाषा हिन्दी होगी । ओड़िआ भाषा में सरकारी दफ्तरों में काम नहीं होगा। केवल इतना ही नहीं सरकारी कार्यालयों में काम करनेवाले कर्मचारियों को निकाल दिया गया तथा उनके स्थान पर हिन्दी भाषी कर्मचारी नियुक्त हुए । इस प्रकार सरकारी नीति से सम्बलपुर अंचल के अधिवासी बहुत दु:खी हुए तथा समझने लगे कि ओड़िआ भाषा, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता को खत्म करने की यह एक सरकारी चाल है । यह ओड़िआ लोगों के लिए घोर अपमान के सिवाय और कुछ नहीं था । इसे सहन करना अनुचित है । फलत: प्रतिवाद के रूप में ओड़िआ भाषा आंदोलन आरंभ हुआ । इस आंदोलन को गति देने के लिये जो लोग सामने आए उनमें सम्बलपुर के नेता चन्द्रशेखर बेहेरा, धरणीधर मिश्र, श्रीपति मिश्र आदि शामिल थे । उत्कल गौरव मधुसूदन दास ने भी विलायत के संसद में अंग्रेजों के इस अन्याय और जनविरोधी कानून-प्रसंग को उठाया ।

जितने प्रकार से कहने पर भी स्थानीय अंग्रेज अधिकारियों ने एक भी नहीं सुनी । लोगों की मांग को अग्राह्य कर दिया । इसके चलते सम्बलपुर के पाँच व्यक्ति भारत के गवर्नर से भेंटकर अपनी आपत्ति

निवेदन करने के लिये शिमला की यात्रा की । उस समय ग्रीष्म निवास में गवर्नर लार्ड कर्जन शिमला में रहते थे । 1901 ईस्वी अगस्त माह में वे शिमला गये । शिमला जानेवाले देशभक्त थे श्रीपति मिश्र, ब्रजमोहन पट्टनायक, मदनमोहन मिश्र, बलभद्र सुआर और सम्बलपुर गोपालजी मठ के महन्त श्री बिहारी दास । लेकिन लार्ड कर्जन से उनकी मुलाकात नहीं हो पाई । वहाँ केवल अपना माँगपत्र देकर वे लौट आए।

इससे पहले ही तत्कालीन मध्यप्रदेश के चीफ कमिशनर फ्रेजर ने शिमला में गवर्नर कर्जन से मिलकर इसबारे में चर्चा कर ली थी। गवर्नर कर्जन ने इसके बाद तत्कालीन मध्यप्रदेश के चीफ कमिशनर फ्रेजर को सम्बलपुर भेजा । वे सम्बलपुर आकर सभी वर्ग के लोगों से मिले । इसके बाद उन्होंने महसूस किया कि सम्बलपुरवासियों के लिए यह अनुचित है । उन्होंने गवर्नर को सूचित किया कि इस क्षेत्र के लिये ऐसा होना नहीं चाहिये, ओड़िआ इनकी भाषा है । फिर गवर्नर के निर्देशानुसार 1902 ईस्वी जून महीने के 18 तारीख को हिन्दी को इस क्षेत्र से हटाने की घोषणा हुई । पुनर्बार ओड़िआ भाषा को सरकारी भाषा के रूप में मान्यता मिली । अपनी मातृभूमि और भाषा के लिये यह थी विजय की सूचना ।

नृसिंह_गुरु की जीवन यात्रा

जन्म - जिस वर्ष ओड़िआ भाषा का पुनः प्रचलन हुआ, ठीक उसी वर्ष 1902 फागुन पूर्णिमा के दिन नृसिंह गुरु का जन्म हुआ । जिस गाँव में उनका जन्म हुआ उस गाँव का नाम था गुरुपाली । उनके पितामह काशीनाथ गुरु ने इस गाँव को बसाया था । सम्बलपुर शहर से थोड़ी दूर में बसा इस गाँव को इसलिये गुरुपाली कहा जाता

था कि गुरु उपाधि युक्त ब्राह्मण के द्वारा वह बसाया गया था । नृसिंह गुरु के नामकरण के पीछे भी एक सत्य छिपा है । उनकी कुल परंपरा से ज्ञात होता है कि नृसिंह गुरु के पिता का नाम था गणेशराम गुरु और माता का नाम लक्ष्मी देवी । दोनों के विवाह के अनेक दिन गुजरने के बाद भी कोई संतान नहीं हुई । इसे लेकर परिवार के लोग चिंतित थे । 1901 वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी के दिन गणेशराम की माता राधादेवी पुत्र और वहू को लेकर बिडाल नरसिंह के वार्षिक मेला देखने पाइकमाल नृसिंहनाथ पहुँचे । मंदिर की आरती के समय राधादेवी ने यह संकल्प किया कि मेरा पोता होगा तो उसका नाम नृसिंह रखूँगी । घर लौटने के कुछ ही दिनों के बाद लक्ष्मी देवी गर्भवती हुई । 1902 मार्च 24 फाल्गुन पूर्णिमा सोमवार के दिन उनके घर एक पुत्र का जन्म हुआ । राधादेवी ने भगवान नृसिंह के आशीर्वाद से पुत्रप्राप्ति होने के कारण नवजात शिशु का नाम ''नृसिंह'' रखा । गणेशराम पुत्र प्राप्ति से अत्यंत आनंदित हुए। उनके वंश में नृसिंह था प्रथम पुत्र संतान । स्वाभाविक है कि इस पुत्र के प्रति परिवार का स्नेह और ममत्व अधिक था । नृसिंह भगवान के आशीर्वाद से नृसिंह गुरु भी प्रह्लाद के समान अत्यंत शांत, शिष्ट, विनम्र, भक्त बनकर प्रशंसा भाजन बने । दो - तीन वर्ष के बाद लक्ष्मीदेवी से एक पुत्र दुर्गाप्रसाद हुए । उनके परिवार की आर्थिक अवस्था उन्नत नहीं थी । ओड़िशा के राजा, जमींदार एवं शासन के उच्च अधिकारी उच्चवित्त श्रेणी में आते थे । इनके अलावा कुछ बड़े कृषक और व्यापारी मध्यवित्त तथा कुछ निम्नवित्त की जनता थी । आदिवासी, हरिजन और वित्तहीन लोगों की भी यहां कमी नहीं थी (आजकल भी ओड़िशा की आर्थिक दशा इन चार भागों में विभक्त है)।

नृसिंह गुरु की शिक्षा

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ओड़िशा का ग्राम्य जीवन उतना खुशहाल नहीं था । गरीबी और शोषण की चादर ओढ़कर भी वह जीना जानता था । ग्रामांचल में औपचारिक शिक्षा के लिए कहीं कोई व्यवस्था नहीं थी, पारंपारिक रीति से गाँव में ही प्राथमिक शिक्षा दी जाती थी । कहीं कोई स्कूल भी नहीं खुले । गुरुपाली में उस समय कोई विद्यालय नहीं था । इसलिये गणेशराम गुरु अपने बेटे को सासन नामक गाँव में ले गये । उस समय उस अंचल में वही एक मात्र विद्यालय था। वहाँ प्रवेश के लिए भी परीक्षा ली जाती थी । उस विद्यालय के प्रधानशिक्षक सागर पाढ़ी ने शिशु नृसिंह की परीक्षा ली और उसके उत्तर में इतने प्रसन्न हुए कि तत्कालीन दो ताँबे के पैसे पुरस्कार के रूप में दिए । कहा जाता है ''होनहार विरबान के होत चिकने पात'' की भाँति नृसिंह एक प्रतिभावान शिशु प्रमाणित हुआ । किन्तु यहाँ एक असुविधा थी कि गुरुपाली से शासन विद्यालय दो किलोमीटर दूरी पर था । इसलिए मातापिता ने नृसिंह को मातामह के घर भेजने का निर्णय लिया । अताबिरा के पास उस गाँव का नाम था ''सरंडा'' । उसके मातामह जगदीश होता ने वहाँ एक प्राथमिक विद्यालय खोला था और वे स्वयं उसके प्रधान शिक्षक थे । नृसिंह ने वहाँ प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की । स्वभाव से शांत-शिष्ट हाने के साथ एक मेधावी छात्र के रूप में भी वह प्रशंसित हुआ । उसकी असाधरण स्मरण शक्ति थी । दो साल के पाठ को उसने एक साल में अच्छी तरह पूरा कर लिया । तीसरी कक्षा निम्न प्राथमिक परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद उसे चौथी कक्षा में छात्रवृत्ति मिली। वह सरंडा छोड़कर उच्च प्राथमिक शिक्षा के लिए सम्बलपुर चले आये ।

उस समय उसे पढ़ाने के लिए पारिवारिक आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी । किन्तु एक वृत्तिप्राप्त मेधावी छात्र को उनके शिक्षकों ने खाने-पीने रहने तथा आनुसंगिक खर्च वहन करने का भार लिया । नृसिंह गुरु ने सम्बलपुर में पटनायकपड़ा स्थित उच्च प्राथमिक शाला में चौथी कक्षा में प्रवेश ले लिया । माध्यमिक कक्षाओं में उन्हें वृत्ति मिली। इसी बीच अर्थात चौथी कक्षा में प्रवेश लेने के समय उसका उपनयन संस्कार किया गया । इस समय उच्च अंग्रेजी कक्षा में पढ़ने के लिए सम्बलपुर के जिला स्कूल के अतिरिक्त अंचल में और कोई विद्यालय नहीं था ।

घरवालों की यही आशा थी कि नृसिंह हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण हो जाने से उसे नौकरी मिल जाएगी और घर की आर्थिक दशा में सुधार होगा । उस समय इसबात की यथेष्ट संभावना भी थी । सम्बलपुर जिला स्कूल में नृसिंह ने नाम लिखाया और छात्रावास में भी उसे स्थान मिल गया । उस समय एक आदर्श एवं नीतिवान शिक्षक कृष्णचन्द्र सेनगुप्त छात्रावास के अधीक्षक थे । नृसिंह उनके सान्निध्य में राजनीति एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा प्राप्त की । नृसिंह की विनम्रता, अध्ययनशीलता तथा उत्तम व्यवहार से वे बहुत प्रसन्न थे और उसे उत्साहित करते थे । साथ ही साथ अपने बेटे की तरह प्यार करते थे । उनकी प्रेरणा से नृसिंह विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कृत भी होता था । सेनगुप्त महोदय से एक उत्तम चरित्रवान एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति बनने में उन्हें सहायता मिली ।

एक उत्तम और आदर्श शिक्षक, आदर्श छात्र निर्माण कर सकता है, इसका यह एक उदाहरण है । 1920 ईस्वी में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होकर नृसिंह ने ग्यारहवीं में प्रवेश लिया । हाईस्कूल पास कर जाना उस समय एक बड़ी उपलब्धि थी । सामान्यत: औपचारिक शिक्षा का यह एक मानदंड था । एक व्यक्ति उक्त परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने से उच्चशिक्षितों में गिना जाता था ।

स्वाधीनता आन्दोलन और नृसिंह गुरु

भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है स्वाधीनता आन्दोलन। यद्यपि वैदेशिक शासनतंत्र से मुक्त होने के लिए मुगल शासनकाल से ही संग्राम चलता आ रहा था, किन्तु समग्र भारतवर्ष में इस प्रकार का आंदोलन नहीं हुआ था । पृथ्वीराज चौहान, राणाप्रताप, शिवाजी, झाँसी की रानी, वीर सुरेंद्र साए आदि अनेक राजा, जमींदार तथा स्वाभिमानी व्यक्तियों ने अपने राज्य, प्रजा एवं संस्कृति की रक्षा के लिए हथियार उठाए थे तथा संघर्ष किया था । इस संघर्ष से कुछ सफलता मिली लेकिन अधिकांश तौर पर उन्हें असफलता का शिकार होना पड़ा था । पहले-पहल सारे भारतवर्ष में किसी एक दल के नेतृत्व में विदेशी शासकों के विरुद्ध आंदोलन करना अद्भुत और आश्चर्यजनक बात थी । 1921 ई. में इस आंदोलन ने गंभीर रूप ले लिया । अवश्य इसका सूत्रपात हुआ था जालियाँवाला बाग के हत्याकांड से । अंग्रेजी शासन को हटाने के लिए अनेक निर्भीक ईमानदार देशभक्तों ने एक स्वर में 'करो या मरो' का दृढ़ संकल्प लिया । उन नेताओं में थे लोकमान्य गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, सर्दार बल्लभभाई पटेल, सुभाषचंद्र बोस, मोहनदास करमचांद गांधी आदि । महत्मा गांधी ने जहाँ एक ओर राजनीतिक स्तर पर असहयोग आंदोलन छेड़ रखा था तो दूसरी ओर सत्य, अहिंसा, दलितोद्धार, सामाजिक न्याय, कर्तव्यनिष्ठा और स्पृश्यास्पृश्य निवारण के प्रति जागरूक थे । भारत में अन्य एक क्रांतिकारी दल की यह धारणा थी कि ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए । इतिहास साक्षी है कि इस राह में चलनेवाले अनेक उत्साही नवयुवक थे जिनमें वीर सावरकर, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद विसमिल, उद्धम सिंह, सुखवीर, मंगल पांडे आदि प्रमुख थे । सुभाषचंद्र बोस ने भी आजाद हिन्द फौज के माध्यम से देश को आजादी

दिलाने का साहस दिखाया । उनका आह्वान था 'मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा', 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', 'अंग्रेजो भारत छोड़ो', 'तुम्हें भगाकर ही दम लेंगे', 'नौजवानों मातृभूमि को विदेशी शासन से बचाने के लिये तैयार हो जाओ' प्रभृति नारों से और क्रांतिकारी स्वरों से पूरा देश गूंज उठा । नवजागरण स्वाधीनता आंदोलन से देश में उथल-पुथल मच गया । परिणाम स्वरूप अंग्रेजों के पाँव उखड़ने लगे, ब्रिटिश शासन की नींव हिलने लगी । इसका प्रतिफलन यह था कि स्कूल-कॉलेज के अनेक देश भक्त छात्र पढ़ाई-लिखाई छोडकर स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने लगे । स्वाधीनता आंदोलन के गरम दल और नरम दल को दमन करने के लिए विदेशी शासकों ने देशभक्तों को पीड़ा पहुँचाया ।

1921 ईस्वी जनवरी महीने में मोहनदास करम चाँद गांधी का आंदोलन जोर पकड़ने लगा । यह एक जन आन्दोलन का रूप लेकर भारत में फैलता गया । भारतवासियों को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी ने कहा - ''ब्रिटिश सरकार शैतान की सरकार है'' । शासन के नाम से यह हमारा शोषण कर रही है । यह सरकार प्रजा का पालन और रक्षा न करके हमारे खून से होली खेल रही है । जालियाँवाला बाग में अंग्रेज-सेना ने साधारण लोगों के ऊपर गोली चलाकर क्रूरता का परिचय दिया है । हजार-हजार निहत्थे लोगों को मारना और घायल करना कदापि उचित नहीं है । किसी एक उत्तम और सभ्य सरकार ऐसा कार्य नहीं कर सकती । ऐसी सरकार का समर्थन हम कभी नहीं करेंगे। इसे हटाने के लिए हम हर तरह से विरोध और आंदोलन जारी रखेंगे। हमारे वकील और कर्मचारी लोग कोई कचहरी नहीं जाएंगे । अंग्रेजों के स्कूल-कॉलेजों में हमारे छात्र-छात्राएँ नहीं पढ़ेंगे । सबसे पहले हमें स्वाधीनता की चिंता करनी चाहिए । इसके बाद अपनी अपनी उन्नति की चिंता करनी चाहिए ।

महात्मा गांधी का यह संदेश सारे देश के कोने-कोने में फैल गया। इसका असर भी जन-जन पर पड़ा । विद्यार्थियों के अंदर नवीन जागरण सृष्टि हुआ । जगह - जगह सभा-समितियाँ होने लगीं । अंग्रेजों के अत्याचार, शोषण की बातें अब जन साधारण तथा नेतालोग कहने लगे। सर्वत्र उनकी निंदा सुनाई दी । ओड़िशा में उस समय मुख्य रूप से गांधी के अनुयायी नेता थे उत्कलमणि गोपबंधु दाश । जब 1920 ईस्वी में कोलकत्ते में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ । ओड़िशा के प्रतिनिधि के रूप में गोपबंधु दाश और भागिरथी महापात्र ने उसमें योग दिया । हरेकृष्ण महताब दर्शक के रूप में उसेमें शामिल हुए थे । असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव को गांधी के कहने पर कांग्रेस ने स्वीकार किया । 1885 ईस्वी में आलान अक्टाभियम ह्युम द्वारा कांग्रेस का गठन हुआ था।

गोपबंधु दाश, भागिरथी महापात्र और हरेकृष्ण महताब कोलकत्ता से लौटकर ओड़िशा में कांग्रेस के प्रचार-प्रसार किस प्रकार किया जाएगा, उस विषय में चर्चा की । उस समय नवकृष्ण चौधरी और हरेकृष्ण महताब रेवेन्सा कॉलेज कटक में पढ़ते थे । देशप्रेम से उद्‌बुद्ध होकर और महत्मागांधी की प्रेरणा से उन्होंने पढ़ना छोड़ दिया तथा वे स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रूप में भाग लेने लगे । पूरे ओड़िशा में उस आंदोलन को मुखरित करने के लिए ओड़िशा प्रदेश कांग्रेस समिति का गठन किया गया । गोपबंधु दाश उसके सभापति और भागिरथी महापात्र संपादक(सेक्रेटारी) बने । राज्य के दूसरे जिलों के लिए भी समितियाँ बनीं । उनकी परिचालना तथा नेतृत्व के लिए निम्न लिखित क्रम में व्यक्तियों को चुना गया ।

1. बालेश्वर जिले के लिए हरेकृष्ण महताब, 2. जाजंपुर के लिए यदुमणि मंगराज, 3. कटक सदर और जगतसिंहपुर के लिए भागिरथी

महापात्र, 4. पुरी जिले के दायित्व में रहे कृपासिंधु मिश्र, 5. संबलपुर के लिए पण्डित नीलकंठ दाश 6. गंजाम जिले के लिए निरंजन पट्टनायक ।

सम्बलपुर में स्वाधीनता आन्दोलन को गति देने के लिए पण्डित नीलकंठ दाश सम्बलपुर आए । वे एम.ए(दर्शन) पास थे । कोलकत्ते के एक प्रसिद्ध महाविद्यालय के अध्यापक की नौकरी छोड़कर स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने योग दिया था । देश की शिक्षानीति में संस्कार लाने, पारंपरिक रूढ़िवादिता और कुसंस्कार दूर करने उनमें प्रबल इच्छा थी । जब उत्कलीय कांग्रेस ने उन्हें सम्बलपुर का दायित्व सौंपा तो उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार किया । ओड़िशा की पश्चिम दिशा में स्थित सम्बलपुर नगर उसी जिले का मुख्य प्रशासनिक केंद्र है । इसका प्राचीन इतिहास तथा भूगोल हीराखंड अंचल के रूप में प्रसिद्ध है । इसका ऐतिह्य गौरवपूर्ण माना जाता है । यहां राजा सुरेंद्र साए ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़कर अपनी मातृभूमि को गौरव मंडित किया था । इस शहर में पहुंचकर पंडित नीलकंठ दाश अत्यंत प्रसन्न हुए । उस समय यहाँ के महान देशभक्त चंद्रशेखर बेहेरा के द्वारा भी एक राष्ट्रीय विद्यालय की प्रतिष्ठा हुई थी । उनसे मिलकर नीलकंठ दाश ने सबसे पहले फ्रेजर प्रेस के पास एक राष्ट्रीय विद्यालय बनाया और वे स्वयं उस विद्यालय के प्रधानशिक्षक बने । स्वेच्छा से अन्य विशिष्ट शिक्षित व्यक्तियों ने भी उस पवित्र कार्य में योग दिया और पढ़ाने का काम किया । इस विद्यालय में केवल पुस्तकीय शिक्षा नहीं दी जाती थी, उपयोगी कला तथा जीवन-जीविका निर्वाह के लिए प्रशिक्षण दिया जाता था । उसमें सूत कातना, कपड़ा बूनना, लकड़ी का काम करना आदि शामिल थे।

राष्ट्रीय विद्यालय के अन्तेवासी सूत कात कर कपड़ा बुनने का काम भी करने लगे । उन कपड़ों को वे रविवार तथा अन्य छुट्टी के दिनों म

सड़क के किनारे फुटपाथ पर बैठ कर बेचने लगे । इसके माध्यम से नीलकंठ दाश और अन्य शिक्षकों ने स्वदेसी चेतना और राष्ट्रीय भावना के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में सफलता पायी ।

उस समय नृसिंह गुरु 18 साल के किशोर थे । एक और परिवार की दयनीय आर्थिक स्थिति तो दूसरी और पराधीन भारत माता की दुर्दशा से वे चिन्तित थे । इस विषय में अपने साथियों से उन्होंने विचार विमर्श किया । एक विचित्र द्वंद्व से विचलित कुछ बिद्यार्थियों ने कहा कि इस साल की पढ़ाई सम्पूर्ण करके ही आन्दोलन में योग देंगे, नहीं तो माता-पिता हमसे रूठ जायेंगे, जो सर्वथा अनुचित है । नृसिंह गुरु ने किन्तु एकान्त में बैठकर विचार किया कि व्यक्तिगत जीवन और पारिवारिक जीवन की अपेक्षा राष्ट्र-जीवन का महत्व अधिक है । फिर अपने मित्रों के साथ बुढ़ारजा पहाड़ (सम्बलपुर शहर के उपखंड म स्थित एक पहाड़, जहां एक शिव मन्दिर भी है) के पाद देश में बैठ कर उन्होंने स्वाधीनता यज्ञ में सम्मिलित होने का विचार किया । किशोरों के मन म अभूतपूर्व उत्साह था एवं उनके मन में अंग्रेजों के शासन से भारत माता को आजाद करने की सुनहली कल्पनाएं जागने लगी ।

महात्मागांधी के स्वाधीनता आन्दोलन तथा प्रेरणा से लड़के बहुत प्रभावित थे । अतएव उन्होंने निर्णय लिया कि ''गुलामी का पाठ नहीं पढ़ेंगे । भारत माता को पराधीनता के बंधन से मुक्त कराना होगा । हम सक्रिय रूप से उसमें अवश्य भाग लेंगे ।'' सचमुच 3 जनवरी 1921ईस्वी को छात्रों ने जिला स्कूल जाना बंद कर दिया । लगभग 40 छात्रों का एक दल ने पंक्तिबद्ध रूप से नगर की परिक्रमा की तथा स्वाधीनता आन्दोलन के विषय में जनसाधारण को सचेत किया । उन छात्रों में से विशेष रूप से

जिनका नामोल्लेख हुआ है - वे थे नृसिंह गुरु, लक्ष्मी नारायण मिश्र, अरुण दास, महम्मद हुसेन, अबदुल मजीद, चंद्रशेखर पाणिग्राही, वेणिमाधव सुपकार और गौरीशंकर साहाणी । वस्तुत: भारतीय इतिहास एवं ओड़िशा इतिहास की यह एक नयी घटना थी । बताया जाता है कि गांधी जी के असहयोग आन्दोलन की पहली लौ सम्बलपुर में ही उठी थी । कोलकत्ते से प्रकाशित ''दी सर्वेन्ट'' पत्रिका के सम्पादक श्यामसुन्दर चक्रवर्ती ने पत्रिका में इसका प्रशंसा की थी । गोपबन्धु दाश उस समय सत्यवादी मैस में थे । वर्तमान के स्वराज्य आश्रम(कांग्रेस कार्यालय) उस समय सत्यवादी मैस थी । उन्होंने मैस में जाकर लड़कों से बोले ''आज मुझे चिट्ठी मिली कि सम्बलपुर के लड़कों ने हड़ताल कर दिया है । इसके बाद भी अगर तुम्हारे अन्दर जागृति नहीं आई तो आनेवाली पीढ़ी कभी तुम्हें माफ नहीं करेगी ''

तत्कालीन घटना को याद करते हुए एक स्वाधीनता सेना का कहना है कि "बच्चे स्कूल नहीं आते हैं । स्कूल के प्रधानशिक्षक इस बात से आश्चर्यान्वित हैं । जिला स्कूल के ये प्रधानशिक्षक थे मधुसूदन दास (पुरी जिले के निमापड़ा के)। वे और भी विस्मित थे कि जिला स्कूल छोड़कर छात्र राष्ट्रीय विद्यालय जा रहे हैं ।''

सम्बलपुर के छात्रों का विद्यालय न जाना भारत वर्ष के लिए एक नया समाचार था और चर्चा का विषय था । सम्बलपुर के जिला स्कूल के छात्रों ने 3 जनवरी को स्कूल जाना बंद कर दिया और 4 तारीख को शहर में हड़ताल का आह्वान दिया । इस दिन शहर में दुकान बाजार पूरी तरह बंद रहे । इस हड़ताल को मिली सफलता से उत्साहित होकर आन्दोलनकारियों ने आंदोलन को जारी रखा । उनके आदर्श से प्रेरणा लेकर जिले के विभिन्न क्षेत्र से युवानेताओं ने सर उठाया । इनमें बरगढ़ के चतुर्भुज शर्मा,

अताबीरा के दफ्तरी नायक, कुचिडा के दाशरथी मिश्र, भेड़ेन के घनश्याम पाणिग्राही, पद्मपुर के हजारी पटेल एवं लईकिरा के रत्नाकर पटेल का नाम प्रमुख है । खूब कम समय में पूरे पश्चिम ओड़िशा में आन्दोलन की लपटें चारों ओर फैल गई । सम्बलपुर में छात्रनेतागण योजनाबद्ध रूप से विभिन्न गांवों में जाकर आन्दोलनकारियों से मिलते थे।

इधर राष्ट्रीय विद्यालय के प्रधानशिक्षक पंडित नीलकंठ दास बच्चों में उत्साह और उल्लास देख कर बहुत प्रसन्न थे । उपर्युक्त छात्रों के साथ नृसिंह गुरु ने भी राष्ट्रीय बिद्यालय में नाम लिखाया । उनके माता-पिता जो उनसे सरकारी नौकरी की अपेक्षा कर रहे थे, किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये । एक और राष्ट्र प्रेम तो दूसरी ओर घर की आर्थिक दयनीय दशा । अन्ततोगत्वा राष्ट्रीय भावना से वे दब गये । नृसिंह गुरु थे अध्यवसायी, इसलिए स्वाधीनता आन्दोलन से प्रेरित होकर भी उन्होंने अध्ययन चालू रखा । उल्लेख है कि राष्ट्रीय बिद्यालय के तीन छात्र उत्तीर्ण हुए - नृसिंह गुरू, दामोदर पाढ़ी और अरूण दास ।

उत्कल मणि गोपबंधु दाश से भेंट

अविभाजित सम्बलपुर जिले का 'झारसुगुड़ा' एक प्रसिद्ध तहसील था। (संप्रति एक स्वतंत्र जिला है) यहाँ सम्बलपुर की अपेक्षा शिक्षित लोगों की संख्या अधिक थी । 1921 ईस्वी के अन्तिम महीने में गोपबंधु झारसुगुड़ा पहुँचे । उनका उद्देश्य था गांधी के उद्देश्य और असहयोग आन्दोलन के विषय में लोगों को अवगत कराना और उद्‌बोधित कराना । जन आन्दोलन के साथ-साथ जनता में राष्ट्रभक्ति की, दृढ़ आत्मविश्वास और कर्त्तव्य बृद्धि के प्रयोग कराना उनका लक्ष्य था ।

लेकिन अंग्रेज शासकों को यह सुहाया नहीं । सरकार ने शान्ति-शृंखला की दुहाई देकर धारा 144 लगा दी और गोपबंधु को वहाँ सभा कराने नहीं दिया । गोपबंधु लौट गये किन्तु उन्होंने अपने लिखित भाषण को नृसिंह गुरु को सौंप दिया । उस समय उन्होंने अनुभव किया था कि यह एक उत्साही, देशप्रेमी, कर्मठ नवयुवक है, इसका उपयोग यह अवश्य करेगा । इसके उपरान्त कांग्रेस के स्वेच्छासेवी लोगों ने एक घर में बैठक की । उस बैठक में गोपबंधु का भाषण नृसिंह गुरु ने पढ़ा । लोगों को लगा कि स्वयं गोपबंधु पढ़ रहे हैं या भाषण दे रहे हैं । नवयुवक छात्र और कांग्रेस के कार्यकर्त्ता उससे बहुत प्रभावित हुए, उनमें नवजागरण की चेतना जगी । नृसिंह गुरु की लोगों ने एक स्वर से प्रशंसा की । इसके नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन अवश्य प्रगति करेगा, इसमें संदेह नहीं है । उत्साहित गुरु को हृदयंगम हुआ कि हमें इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए । उनके समभावापन्न एक व्यक्ति राजपुर गाँव में स्वाधीनता आंदोलन के लिए कार्य कर रहे थे । किन्तु वहाँ का स्थानीय जमींदार उसका विरोध कर रहा था, उन्हें अपमानित भी करता था । यह बात जब नृसिंह गुरु को मालूम हुई, तो तुरंत ही वे वहाँ पहुँचकर जमींदार को निर्भीकता के साथ खरी-खोटी सुनाई । लोगों ने भी गुरु का समर्थन किया । लोगों का दवास्वर मुखरित हुआ । जमींदार, डर गया और विरोध करना छोड़ दिया ।

1922 ईस्वी में गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन बंद कर दिया । परन्तु लोगों से कहा कि आपलोग सूत कातना खादी वस्त्र बुनना, छुआ-छूत भेदभाव को त्यागना जैसे कार्यों में लग जायें और दलितों के उद्धार कार्यों में जुट जायें तथा स्वदेसी-जागरण को अपनाएँ । तब नृसिंह गुरु सक्रिय राजनीति में न उलझ कर इन्हीं कार्यों में ही लग गये।

उस समय उस अंचल में महावीर नामक एक कांग्रेसी नेता थे। उनके घर में कांग्रेस का कार्यालय बना। वहीं रहकर गुरु ने खादी का प्रचार किया तथा हरिजन कल्याण के लिए भी स्वयं को नियोजित किया। उस क्षेत्र में अगरिया जाति के लोग अधिक थे। (लोगों के पूर्वज कभी आगरा के रहने वाले थे, इस अंचल के लोग उन्हें अगरिया कहते हैं) मुख्य रूप से वे खेती करते थे और कपड़ा बुनते थे। गुरु ने उन्हें खादी बुनने के लिए प्रेरित किया। कांग्रेसी लोगों ने खादी पहनने का संकल्प लिया। परिणाम स्वरूप अगरिया लोगों की आमदानी बढ़ी और खादी वस्त्र बिकने लगे। कांग्रेस के कारण हमें लाभ हुआ है, इसलिए हमें कंग्रेस का समर्थन करना चाहिए कहकर उसमें से बहुत से लोग कांग्रेस के सदस्य भी बन गये।

कांग्रेस के कार्य करने वालों के ऊपर अंग्रेज शासकों का बहुत गुस्सा था फिर भी निड़र होकर के उस अंचल के दो हजार कांग्रेसी स्वयं सेवक निकले। इस कारण से कांग्रेस के बड़े नेताओं ने महावीर प्रसाद को उत्कल प्रान्तीय कांग्रेस समिति का सभापति बना दिया। इस कार्य में नृसिंह गुरु का सहयोग प्रशंसनीय रहा। उनके साथ सम्बलपुर हस्ततंत के वयनशिल्पी कृतार्थ आचार्य (उन्हें पद्मश्री की उपाधि से भारत सरकार ने अलंकृत किया था) एवं वृंदावन गुरु भी सम्मिलित थे।

1924 ईस्वी में चन्द्रशेखर बेहेरा के साथ नृसिंह गुरु मिलकर कांग्रेस के सांगठनिक कार्य को दृढ किया। यह कार्य केबल राजनीतिक सीमा में आबद्ध नहीं था बल्कि उदारवादी समाजोद्धार कार्य भी उसमें शामिल था। उन्होंने निर्णय लिया कि स्वायत्त शासन संस्थाओं को वे प्रोत्साहित करेंगे एवं उनमें भाग लेंगे; जिनके अन्तर्गत निम्नस्तर में जीवन-यापन करनेवाले लोगों की दयनीय दशा में सुधार होगा।

संयोगवशत: विशिष्ट समाज सेवा जननेता चन्द्रशेखर बेहेरा सम्बलपुर नगरपालिका के अध्यक्ष बन गये। उन्होंने नृसिंह गुरु की कर्त्तव्यपरायणता और सत्यनिष्ठा देखकर उन्हें नगरपालिका में एक नौकरी दे दी। साथ ही साथ कांग्रेस के सांगठनिक कार्य तथा स्वतन्त्र उत्कल प्रदेश संगठन कार्य के लिए भी उन्हें प्रेरित किया, समय - समय पर अवकाश भी दिया।

1928 ईस्वी में महात्मागांधी ओड़िशा पधारे। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी कस्तूरवा गांधी, बेटा और कई विशिष्ट नेता भी थे। सम्बलपुर में वे चन्द्रशेखर बेहेरा के यहाँ रहे। उनके आतिथ्य की जिम्मेदारी नृसिंह गुरु को सौंपी गई थी। उनके खाना-पीना, सोना-बैठना एवं सभा आदि का आयोजन करना आदि सारे काम नृसिंह गुरु ने बखूबी संभाला। गांधी के संपर्क में आने से वे उनकी दिनचर्या, चाल-चलन, व्यवहार, सत्य और अहिंसा के प्रति दृढ़ निष्ठा आदि देख कर बहुत प्रभावित हुए। गांधी जी की छाप उन पर ऐसी पड़ी कि यावज्जीवन वे उसे पालन करने के साथ गांधी जी के अनुयायी बन गये। धीरे-धीरे बात करना, किसी के प्रति कटुवचन न कहना, निर्भीकता, अहिंसा, निष्ठा और सत्यवादिता के साथ वे देश प्रेम के प्रतीक के रूप में अविस्मरणीय रह गये। केबल इतना ही नहीं उनकी वेश-भूषा, खाद्य पेय आदि में भी बदलाव आया। ठेहुने तक खादी कपड़ा पहनना, एक खादी की चदर ओढ़ना, कुर्त्ता-कमीज न पहनना, खाली पैर चलना आदि से वे अभ्यस्त हो गये। उस युग में हमारे देश में चीनी नहीं बनती थी, विदेश से आती थी। स्वदेशी भावना से प्रभावित होने के कारण उन्होंने प्रण किया था कि चीनी के बदले गुड़ खाऊँगा, विदेशी वस्तुओं का यथासंभव परित्याग करूँगा। वे कपड़े का छाता धारण न करके ताड़ के पत्ते से बने छाता का व्यवहार करते थे। एक तपस्वी की तरह स्वदेशी-चेतना से उद्‌बुद्ध नृसिंह गुरु, विनोवा भावे से तुलनीय हैं। युवावस्था में ही

ऐसे त्यागपूत देशभक्त क्वचित देखे जाते हैं ।

नृसिंह गुरु का शारीरिक गठन उतना आकर्षक नहीं था । ढेगने कद और गेहुएँ रंग का एक सरल देहाती के समान शहर में भी वे अलग से पहचाने जाते थे । वाह्यव्यक्तित्व के अतिरिक्त उनका अन्दरुनी व्यक्तित्व क्रोधरहित एक निरभिमान महनीयता से उद्भासित था । उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था । पश्चिम ओड़िशा के प्रथम मैट्रिक पास धरणीधर मिश्र ने सम्बलपुर में भाषा आन्दोलन का नेतृत्व लिया था । आगे चलकर वानप्रस्थ जीवन यापन करने वाले केबल धरणीधर के नाम से वे परिचित थे । उनके बड़े बेटे रामनारायण मिश्र एक प्रसिद्ध वकील थे । उनके पुत्र जगन्नाथ मिश्र नृसिंह गुरु के सहपाठी मित्र थे । जगन्नाथ एक मेधावी छात्र थे । उनके मित्र बनने के कारण समय समय पर नृसिंह उनके घर जाते थे । धरणीधर तथा रामनारायण भी नृसिह गुरु को स्नेह करते थे। धरणीधर ने उन्हें स्वरचित भागवत एकादश स्कन्ध की टीका, तत्ववोध, आत्मवोध पुस्तक उपहार देकर आध्यात्मिक प्रेरणा दी थी । बचपन में भी वे सत्य से अनुप्राणीत थे । इस प्रकार उनके निराडम्बर व्यक्तित्व को स्मरण करते हुए उदयनाथ षडंगी ने लिखा है - जब नृसिंह गुरु ''दैनिक ''समाज'' के सम्बलपुर के लिए सम्वाददाता, वितरक तथा प्रतिनिधि के रूप में काम करने लगे तो एकदा हम दोनों ''समाज'' के संपादक राधानाथ रथ से मिलने कटक गये । राधानाथ रथ तत्कालीन ओड़िशा मन्त्रीमण्डल के मन्त्री थे । उन से मिलने के लिए गुरु को परिचय पत्र दिया गया था, जिसमें लिखा था नृसिंह गुरु सम्बलपुर के ''समाज'' प्रतिनिधि हैं । मंत्री राधानाथ के पास उस समय कई विशिष्ट व्यक्ति बैठे थे । जब गुरु ने उन्हें अपना परिचय पत्र दिया तो उनके सरल स्वभाव और साधारण ग्रामीण वेशभूषा देख कर राधानाथ रथ ने कहा- ''आपके जैसे प्रतिनिधि

''समाज'' के गौरव को क्षुण्ण करते हैं । आपको ''समाज'' का प्रतिनिधि नहीं रखा जा सकता''। गुरु ने चुप-चाप सब सुना और जवाब में केबल इतना कहा- ''यदि मेरे कारण ''समाज'' के गौरव में आंच आती है तो आप मुझे इस पद से खुशी से हटा सकते हैं । किन्तु मैं अपनी वेशभूषा नहीं बदल सकता ।'' कुछ समय के लिए राधानाथ विस्मित हो गये तथा एक निष्ठापर दृढ व्यक्तित्व के सामने स्वयं को अपराधी जैसा महसूस करने लगे । इसके बाद उन्होंने कहा कि ''आज आप हमारे घर रहेंगे और मेरे साथ भोजन करेंगे ।'' सचमुच विनम्र, सरल, निराडम्बर व्यक्तित्व भला किसे प्रभावित नहीं करता? इसमें संदेह नहीं कि नृसिंह गुरु थे एक अजातशत्रु ।

ग्रामीण एजेंटों पर ''समाज'' कार्यालय के हजार-हजार रुपए बकाया था । उन्हें नोटिस पर नोटिस भेजा जाता था । बंडल भेजना बंद कर दिया जाता था । मामला कोर्ट तक पहुँच जाता था फिर भी एजेंटों से बकाया नहीं मिलता था । दूसरी ओर नृसिंह गुरु का हर माह 7 से 10 तारीख तक पिछले माह का हिसाब के साथ चैक कार्यालय में पहुँच जाता था । अगर कुछ भुगतान नहीं करना है तो उसके लिए क्षमा याचना सहित अगले माह भुगतान का आश्वासन भी साथ में पहुँच जाता था । अगले माह उसका भी समय पर भुगतान हो जाता था । तीन चार माह में एकबार कार्यालय पहुँचकर हिसाब का मिलान कर लेना उनकी आदत थी ।

और, जब भी वे कटक जाते थे एक साधु की तरह साथ में एक खादी का कंथा(विस्तर) एवं उसी के अनुसार बनाया गया एक छोटा सा तकिया लटकाए रहते थे । कार्यालय के फर्स पर सोकर रात बीताते थे। एक सन्यासी की तरह किसी पर आश्रित होना मानो उनकी आदत ही

नहीं थी । एकबार की घटना है । वे कटक के ''समाज'' कार्यालय में संध्या के समय पहुँचे । कार्यालय में अपना सामान रखकर दूसरे काम से निकल गए । साथ ही प्रबंधक को कह गए थे कि मुझे लौटते देर हो सकती है । प्रबंधक इस बात को दरवान से बताना भूल गए ।

नृसिंह गुरु जब वापस आए तो रात के 11 बज चुका था । तब तक हररोज की तरह द्वार पर ताला लग चुका था । दरवान उन्हें पहचानता नहीं था और न ही उसे प्रबंधक से कोई निर्देश मिला था । नृसिंह बाबू ने दरवान को ताला खोलने के लिए कहा लेकिन उसने मना कर दिया । दरवान ने कहा कि प्रबंधक के निर्देश के बिना वह ताला नहीं खोल सकता । प्रबंधक को खबर भेजने से चाहे वह गहरी निंद में क्यों न हो उठकर आकर नृसिंह बाबू को आदर सहित ले जाते, क्योंकि ''समाज'' कार्यालय में सब उनका आदर करते थे । लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया । चुपचाप ''समाज'' कार्यालय के सामने स्थित गोपबन्धु बाग की ओर चल दिए । प्रतिमा के पास गमछा ओढ़कर सो गए । सर्दी का मौसम था । रात के समय ओस गिर रहा था । दूसरी ओर कटक में मच्छरों का आतंक भी कम नहीं था । इन सब चीजों की उन्होंने परवाह नहीं थी, क्योंकि खुले आसमान के नीचे इस सय्या पर रात बीता लेने की उन्होंने सोच लिया था।

विधाता को यह भी मंजूर नहीं था । बाग का रखवाला ने सोचा कि कोई नशेड़ी या असामाजिक होगा । उसने रात की ड्यूटी बजा रहे कनेस्टेबल को बुला लाया । पुलिस वाले ने बिना कुछ पूछे नृसिंह बाबू का हाथ पकड़कर सीधा बक्सीबाजार से लालबाग थाना ले गया । थानेदार को भी उन्होंने कुछ नहीं बोला । हवालात में सोकर रात बीता दी।

अगले दिन सुबह थाना से फोन आने के बाद ''समाज'' कार्यालय के वार्ता संपादक उदयनाथ षडंगी जाकर उन्हें ले आए । आते समय पूछा ''रातभर परेशान होने के बाद भी दरवान से प्रबंधक के पास खबर क्यों नहीं भेजा ?''

इसका जवाब मिला ''मैंने सोचा कि इतनी रात को सभ्य लोगों को कष्ट क्यों दूँ ? कहीं पर सोकर रात गुजार दूँ तो चल जाएगा । आज की रात हवालात में बहुत अच्छी तरह कट गई ।'' यह हैं नृसिंह गुरु ! क्या इन्हें इस युग के मनुष्य में गिना जा सकता है ?

संयमित जीवन जीनेवाले गुरु कभी चाय, काफी, सिगारेट, बिड़ी एवं बाजार में निर्मित कोई खाद्य, वस्तु और पानीय ग्रहण नहीं करते थे। राग-द्वेष-रहित एक निष्कपट सरल मनुष्य के रूप में वे अपनी 'गुरु' उपाधि को गुरुत्व से भर दिया था ।

विवाह एवं परिवार

नृसिंह गुरु जब आठवीं कक्षा में पढ़ रहे थे उसी समय उनके पिता ने उनका विवाह सारंगगढ़ (संप्रति छत्तीसगढ़ राज्य के अन्तर्गत) के रहनेवाले बलराम मिश्र की पुत्री प्रियवती के साथ करा दिया । तत्कालीन व्यवस्था के अनुसार बाल विवाह तो हो जाता था किन्तु कन्या अपने पिता के घर में ही रहती थी । बाद में वयस्क होने के बाद उसकी विदायी या द्विरागमन होता था अर्थात् ससुराल भेजा जाता था । जब कन्या को 18 साल और नृसिंह गुरु को 22 साल हुए तव प्रियवती ससुराल आयी । उनके दो पुत्र भवानीशंकर, ताराकान्त एवं तीन कन्याएं हुई कुमुदिनी, प्रेमलता एवं दिनेश्वरी । दिनेश्वरी का 6 साल की अल्पायु में मृत्यु हो गई थी । उनका दाम्पत्य जीवन सामंजस्यपूर्ण था।

पत्रकारिता जीवन

समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के प्रति नृसिंह गुरु की रुचि बचपन से ही रही । जब वे अपने नाना के यहाँ प्राथमिक शिक्षा पा रहे थे उस समय 'उत्कल हितैसिणी' सम्वाद पत्र उनके वहाँ आता था । उसमें देश विदेश की खबरें पढ़कर वे खुश होते थे । रामकृष्ण मिशन से 'उद्‌वोधन' नामक पत्रिका भी आती थी, जिसमें नैतिक शिक्षा और धार्मिक सदुपदेश होते थे । जिलास्कूल में पढ़ते समय लोकमान्य बालगंगाधर तिलक द्वारा प्रकाशित 'स्वराज्य' पत्रिका भी पढ़ते थे । महात्मागांधी के 'यंग इण्डिआ' से वे बहुत प्रभावित थे । उसके कारण 1921 में उन्होंने जिलास्कूल की पढ़ाई छोड़ दी थी । नीलकंठ दाश की 'सेवा' तथा बहुत दूर से प्रकाशित 'आशा' पत्रिका से भी वे अनुप्राणित रहे । इन सबके अतिरिक्त विशिष्ट सम्वाददाता, संपादक तथा साहित्यकारों के संपर्क में आने के कारण पत्रकारिता के प्रति उनका रुझान बढ़ता ही गया । आगे चलकर वे ''समाज'' के सम्वाददाता, प्रतिनिधि एवं वितरक भी बन गये । पत्रकार के रूप में अपने कर्त्तव्य का उन्होंने यथोचित ढ़ंग से पालन किया । 1921-30 ईस्वी में पंडित गोपबंधु दाश द्वारा प्रतिष्ठित दैनिक ''समाज'' के लिए वे सम्बलपुर अंचल के समाचार भेजते रहे । 1932 ईस्वी में ''समाज'' संस्था की ओर से मान्यता प्राप्त एक सम्वाददाता के रूप में उन्हें स्वीकृति मिली । 1936 में जब ओड़िशा के प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ दास थे, तब मंत्रीमण्डल के सदस्य श्री बोधराम दुबे के परामर्श से वे 'एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इण्डिया' के सम्वाददाता भी बन गये । 1938 में एसेम्ब्ली निर्वाचन के समय साप्ताहिक 'जागरण' के संपादक का दायित्व भी उन्होंन अच्छी तरह से सम्भाला । 1947 में देश स्वाधीन के उपरान्त एसोसिएटेड प्रेस

ऑफ इण्या का नाम बदल कर 'प्रेस ट्रष्ट ऑफ इण्डिया' रखा गया । उसकी भी मान्यता प्राप्त करके वे खबर भेजते रहे ।

नृसिंह गुरु ने अपनी आत्मजीवनी में लिखा है कि ''एसोसिएटेड प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया' बन गया । इसमें 20 साल तक सम्वाददाता के रूप में कार्य करने के बाद मुझे मासिक 30 रुपए प्रति माह रिटेनर मिलने लगा । 10 वर्ष बाद यानि 30 साल की सेवा के बाद मेरे कुछ पत्रकार बन्धुओं के कारण मुझे इससे इस्तीफा देने मजबूर किया गया । इसे मैंने स्वीकार कर लिया ।

हीराकुद बांध योजना के शिलान्यास से लेकर निर्माण कार्य पूर्ण होने तक प्रधानमंत्री, केंद्रमंत्री एवं विशिष्ट वैज्ञानिकों से लेकर राष्ट्रपति के दौरे तक को एक सायकिल द्वारा धूलभरी सड़क पर जाकर खबरें इकट्ठा करना पड़ता था । हीराकुद बांध निर्माण के समय मई माह की चिलचिलाती दोपहरी में एक दिन सीढ़ी टूट जाने से श्रमिकों की मौत की घटना की खबर मिलते ही बांध निर्माण के मुख्य इंजीनियर स्वर्गीय थिरुमल आयांगार से टेलीफोन से संपर्क कर घटना की जानकारी लेना चाहा था । उन्होंने टेलीफोन पर घटना की जानकारी देने से मना करते हुए उनके पास आने की सलाह दी । मैं सायकिल पर बुर्ला जाकर उनकी सलाह पर अस्पताल में घायलों को देखकर सम्बलपुर लौटकर दिन के 3 बजे टेलीफोन के जरिए कटक पीटीआई कार्यालय में इस दु:खद घटना की खबर पहुँचाया । इस घटना में 103 श्रमिकों की मौत हो गई थी । इनमें से 10 की तो घटनास्थल पर ही मौत हो गई थी । स्वर्गीय एन.आर.स्वामी ने इस समाचार के लिए आभार व्यक्त किया था । उसी रात यह समाचार आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित हुआ था ।

एक दिन रात को हीराकुद लैंड एक्युजिशन अधिकारी स्व. सूर्यकुमार पूजारी डीएसपी श्री श्यामसुन्दर पाढ़ी(भूतपर्वू डीजी) इब नदी में गए हुए थे । उनकी लँच पत्थर से टकराकर डूब गई तो दोनों ने एक पत्थर के सहारे रात बीताया था । दूसरे दिन सुबह उनका उद्धार किया गया । इस समाचार के लिए मुझे पीटीआई द्वारा पुस्कृत किया गया था । लेकिन एक अतिरंजनापूर्ण चमत्कार समाचार को लेकर मैं चूप रहा तो उसी बहाने मेरी काबिलियत पर सवाल उठाते हुए मुझे इस्तीफा देने की सलाह दी गई थी ।''

समाचार को वे मानवीय संपर्क और मुल्क के लिए वाणी रूप मानते थे । किसी प्रकार के समाचार को वे बढ़ा चढ़ा कर या आलंकारिक रूप में या असत्य का रंग चढ़ाकर नहीं भेजते थे । उनके द्वारा भेजे जानेवाले यथार्थ, सच्चाई, ताजा एवं निष्पक्ष समाचार सर्वजन आदृत होते थे । इसका एक उदाहरण देते हुए डॉ. यज्ञकुमार साहू लिखते हैं -''जीवन के अंतिम समय में सहायता करने के लिए ''समाज'' द्वारा उनके पुत्र ताराकान्त को सम्वाददाता के रूप में नियुक्त किया गया था । ताराकान्त बाबू दस साल तक कार्य करने के बाद बिना किसी कारण के उन्हें हटा दिया गया था । उनके स्थान पर किसी और को नियुक्त किया गया था । नृसिंह गुरु इससे बेहद क्षुब्ध हुए।

उस दौरान आयकर विभाग के अधिकारियों ने आय से अधिक संपत्ति की शिकायत मिलने पर बोडासम्बर-पद्मपुर के एक व्यापारी के घर छापेमारी की और जब तक जांच कार्य पूरा न हो जाए तब तक उन्हें अपने पास रोके रखा । इस दौरान व्यापारी की अचानक मृत्यु हो गई थी । इसके बाद व्यापारी के पुत्र ने शिकायत की कि आयकर

अधिकारियों के दुर्व्यवहार से उनके पिता की मृत्यु हुई है । इस घटना की सत्यता जानने नृसिंह गुरु जीवन के अंतिम समय में ही सुदूर पद्मपुर पहुँच गए । सभी पहलुओं पर जांच पड़ताल कर ''समाज'' कार्यालय में यह समाचार भेज दिया था । उनका समाचार सत्य पर आधारित था । यह समाचार दूसरे समाचारपत्रों में भी प्रकाशित हुए थे । इस समाचार से असंतुष्ट आयकर विभाग ने शिकायत की । इस पर अन्य समाचारपत्रों ने समाचार प्रकाशन पर माफी नहीं मांगा था, जबकि ''समाज'' के संपादक डॉ. राधानाथ रथ ने कुछ लोगों के बहकावे में आकर इस समाचार के लिए क्षमा मांगा था । जीवनभर सत्य एवं तथ्यपरक समाचार देनेवाले नृसिंह गुरु को इस घटना से गहरी ठेस पहुँची । इस घटना ने गुरुजी के निस्वार्थपूर्ण एवं सच्चे पत्रकारिता जीवन में दाग लगा दिया । जिस ''समाज'' को श्री गुरु अपने जीवन से बढ़कर मानते थे अंतिम समय में उनके जीवन दीप को बूझाने का यह एक कारण बन गया था।''

रुचिकर, सरल और संक्षिप्त शब्दों में ओड़िआ भाषा में वे समाचार लिखते थे । आजकल ओड़िआ में जैसे अंग्रेजी शब्दों का बहुल प्रयोग परिलक्षित होता है गुरु की लेखनी उसे स्वीकार नहीं करती थी । विकृत ओड़िआ उनके लिए सर्वथा बर्जित थी । छोटे लम्बे कागज का एक वण्डल हमेशा उनके खादी के झोले में रहता था ।

''समाज'' के पूर्व वार्ता संपादक उदयनाथ षडंगी नृसिंह गुरु की पत्रकारिता पर लिखते हैं ''नृसिंह गुरु एक सम्वाददाता थे । राज्य के श्रेष्ठ समाचारपत्र 'समाज' के एक जिला प्रतिनिधि, पूरे अंचल के सम्वाददाताओं के वे गुरु थे ।

विभिन्न अंचलों के सम्वाददाताओं से पहुँचे समाचार, सभा समितियों के विवरण, नेताओं द्वारा भेजे गए विज्ञप्तिों को पढ़कर

उसमें सुधार कर प्रकाशन लायक बनाने के लिए तीन तीन उपसंपादक कार्य करते थे, लेकिन नृसिंह गुरु द्वारा प्रेषित समाचार ऐसे निर्भूल एवं कांटछांटकर लिखे गए होते थे कि उसे पढ़ने की जरूरत नहीं होती थी । उनकी लिखावट सहित दस्तखत देखकर सीधे कम्पोज के लिए भेज दिया जाता था । उनके भेजे गए समाचार पर कभी विवाद नहीं हुआ । किसी भी समाचार को लेकर राजनीतिक दल का कोई नेता या कार्यकर्ता कभी असंतोष व्यक्त नहीं किया । सभा या सम्मेलनों का विवरण ऐसा तैयार करते थे कि किसी को मुँह खोलने का मौका नहीं मिलता था । सभी दल, सभी अनुष्ठान एवं सभी वर्गों को समान नजरिए से देखते थे।''

उनके समाचारों में विशेष रूप से आंचलिक जीवन की समस्याएँ, खेती की बातें, ग्रामीण कृषकों की परिस्थिति मुख्यत: उल्लिखित होती थी । ब्राह्मणकुल के होने के वाबजूद उनका जीवन एक किसान की भांति था । उन्होंने खेती को अपनी जीविका का साधन मान लिया था। इसलिए अपने अंचल के मौसम, धान आदि फसलों की दशा, उत्पादन, दोष, त्रुटि आदि के साथ साथ तत्संबंधी उचित परामर्श भी अपने समाचारों में दिया करते थे । प्राय: वे साहित्यिक, राजनीतिक स्तम्भ आदि नहीं लिखते थे । मुख्य रूप से समाचार भेजना उनका कार्य था ।

सम्वाददाता ही नहीं पहले-पहल वे एजेंट के रूप में भी ''समाज'' बेचते थे । नियमित रूप से लोगों के पास ''समाज'' पहुँच जाय, देश-विदेश तथा आंचलिक खबरों से लोग वंचित न रह जायें, यह उनका उद्देश्य था । परिणाम स्वरूप सम्बलपुर में ''समाज'' की माँग बढ़ गयी। प्रत्येक सुबह पैदल या साइकिल से वे स्वयं घुम-घुम कर उनका

''समाज'' वितरण करना कुछ लोगों को पसंद नहीं था । पर वे उन्हें यह समझा कर कहते थे- 'अरे भाई, एक तो मेरा प्रात: भ्रमण हो जाता है और तुम्हें समाचार पत्र मिल जाते हैं । अपने छोटे बड़े काम करने में हम क्यों सरमाएँ? साइकिल से घुम घुम कर वे खबरें संग्रह भी करते थे । बस से कटक से जो ''समाज'' के पैकेट आते थे उन्हें उतारना और विभिन्न अंचलों में हकरों के द्वारा भेजना भी उनका काम था । पश्चिम ओड़िशा में दैनिक ''समाज'' के प्रसार प्रचार में नृसिंह गुरु की भूमिका महत्वपूर्ण है । उनके प्रयास के कारण ही आज ''समाज'' एक लोकप्रिय समाचार पत्र के रूप में पश्चिम ओड़िशा के घर घर पहुँच रहा है । समय था ''समाज'' कहने से नृसिंह गुरु को ही समझा जाता था। उनके आदर्श से प्रेरित होकर लोग ''समाज'' के ग्राहक बन जाते थे। इस प्रकार 50 वर्षों तक इमानदारी के साथ उन्होंने यह कार्य किया । प्रारंभ में वे बिना पारिश्रमिक के खबर संग्रह करते थे । आगे चलकर 5 रूपये से लेकर 250 तक उन्हें पारिश्रमिक मिलता था । इसमें ही वे संतुष्ट थे । संत कबीर दास के समान उनका सिद्धान्त था -

साईं उतना दीजिए जा में कुटुम समाये,
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय ।

नृसिंह गुरु पत्रकारिता जगत के एक आदर्श थे । 1984 जनवरी को उनके पत्रकारिता जीवन की 51 वर्ष की पूर्त्ति हुई तो उनके लिए जिला पत्रकार संघ की ओर से एक भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया । उसमें विशिष्ट पत्रकार, समाजसेवी, साहित्यिक, उच्चपदस्थ सरकारी अधिकारी, जनप्रतिनिधि तथा साधारण नागरिक उपस्थित थे । सभी लोंगों ने उनके सम्वाददाता कार्य की खूब प्रशंसा की । इस अवसर पर उन्होंने अपने संबोधन में कहा था -'' संप्रति स्वार्थवश पत्रकारिता

क्षेत्र में कुछ लोगों के प्रवेश करने से यह क्षेत्र प्रदूषित होता जा रहा है। दलीय एवं पूंजीवादी मालिकों द्वारा अनेक समाचार पत्र प्रकाशित होने लगा है । अधिकांश समाचार पत्र विपक्षी की भूमिका निभाते नजर आ रहे हैं । बीते वर्ष की प्रलयंकारी प्राकृतिक आपदा के समय मैं स्वयं सहायता बांट रहा था । मेरे निजी अनुभव के अनुसार इस कार्य में अनेक सरकारी अधिकारी तहेदिल आपदा के समय लोगों के पास पहुँचे थे । पत्रकारों ने उन लोगों की आलोचना करना भी नहीं छोड़ा है ।

एक स्वाधीनता संग्रामी के रूप में संप्रति विशृंखल एवं उत्तेजक स्थिति में विपक्षी एवं विछिन्नतावादी जिस तरह भूमिका निभा रहे हैं, मुझे लगता है कि महात्मागांधी के कठिन परिश्रम से मिला स्वाधीनता विपन्न हो रहा है । इस समय पत्रकारों को महती भूमिका निभानी होगी। समाचार लिखते समय संयम बरतना अनिवार्य है ।'' 1983 में संबलपुर में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन ओड़िशा के मुख्यमंत्री श्री जानकी बल्लभ पट्टनायक ने उन्हें सम्मानित किया था । इसके अलावा पत्रकारिता में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए अनेक संगठनों द्वारा उनका अभिनंदन किया गया था ।

ओड़िशा से अलग हुए अंचलों को मिलाने का कार्य

1918 ईस्वी 16 फरवरी को उत्कल गौरव मधुसुदन दास सम्बलपुर आये । नगरपालिका भवन में उनकी स्वागत सभा का आयोजन किया गया। इस आयोजन का दायित्व भी नृसिंह गुरु को दिया गया। इस सभा में मधुसूदन दास ने स्वतंत्र उत्कल प्रेदश गठन के लिए जनसाधारण से

निवेदन किया । उनके निवेदन का प्रभाव नृसिंह को प्रभावित किया। उसके बाद वे फुलझर, खडियाल, पद्मपुर और चन्द्रपुर प्रभृति अंचलों में भ्रमण कर जनमत संग्रह करने में सहायक हुए ।

नशा निवारण कार्य

नशा सामाज एवं मनुष्य जीवन के लिए एक रोग समान है । इसके छोटे-बड़े अनेक प्रकार हैं । सबसे बड़ा मारात्मक है शराब पीना । महात्मा गांधी ने समाज संस्कार के लिए 'शराब मुक्ति' पर जोर दिया । यह एक समाज विरोधी तत्व और कलंक है । इससे व्यक्ति के पारिवारिक और सामाजिक जीवन दूषित हो जाता है । इससे धन, जन, मान की हानि होती है । इसकी अतिरेकता को हमेशा रोकना आवश्यक है । नशा-पिशाच के पंचों में फँस कर मनुष्य अपना विवेक खो बैठता है । इसलिए उससे दूर रहने के लिए जन सचेतनता पर उन्होंने जोर दिया । उन्होंने देखा कि शराब पीने के कारण कई परिवार उजड़ जाते हैं, स्त्रियाँ गाली-गलोज और मार-पीट का शिकार बन जाती है, बच्चों के ऊपर उसका बुरा असर होता है। नशाखोर व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को भी भूल जाता है । इन सब कारणों से समाज के इस कलंक को हटाने की गांधीजी की प्रेरणा लेकर नृसिंह गुरु और उनके साथियों ने शराब बनानेवाले कारखानों, अड्डों, दूकानों एवं पीने वाले व्यक्तियों के पास जाकर इसकी अपकारिता के विषय में समझाया । फलस्वरूप 1928 से 1929 के बीच एक बर्ष के भीतर सम्बलपुर में शराब बननेवाले कारखाने वंद हो गये । जिन लोगों ने शराब बनाने के लिए लाइसेन्स प्राप्त किया था, उन्होंने सरकार को लाइसेन्स लौटा दिया । इसके कारण अंग्रेज सरकार को मिलनेवाला राजस्व कम हो गया । इसके चलते सम्बलपुर के डेपुटी कमिशनर की नौकरी भी चली गई । एक सर्वेक्षण से

पता चलता है कि इस दिशा में उस समय इतनी बड़ी सफलता भारतवर्ष में अन्यत्र कहीं भी नहीं मिली थी । इसलिए कांग्रेस के नेता पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने सम्बलपुर के कांग्रेसी सदस्यों को अपने हाथ से लिखकर प्रशंसा पत्र भी भेजा था । नृसिंह गुरु के साथ उस कार्य में सहायता करने वाले थे- चिन्तामणि पूजारी, भागिरथी पट्टनायक, घनश्याम पाणिग्राही और महावीर सिंह आदि । नशाबन्दी कार्य को सरकार विरोधी कार्य मानकर सरकार ने नृसिंह गुरु को छह महीने जेल दण्ड तथा 50 रूपये जुर्माना भी लगाया था । इतने पर भी इस महान सामाजिक कार्य से वे विरत नहीं रहे ।

नमक सत्याग्रह

1930 ईस्वी में महात्मागांधी ने नमक या लवण सत्याग्रह आन्दोलन चलाया । हमें यह मालूम है कि भारतवर्ष के तीन दिशाओं में समुद्र है । पांरपरिक रीति से समुद्र तटों के अधिवासी लोग समुद्र के पानी को स्थल भाग में सुखाकर नमक बनाते थे । लेकिन अंग्रेज सरकार ने इस पर रोक लगा दिया और नमक बनाना बंद करवा दिया। अंग्रेज ठेकेदारों के द्वारा नमक बनाने का निर्णय लिया । इससे लोगों की जीविका मारी गई । गांधीजी इस बात से बहुत नाराज हुए । उन्होंने कहा- 'समुद्र अंग्रेजों का नहीं है । यहाँ के अधिवासियों का ही इस पर पहला हक बनता है । इसलिए ये लोग जरूर नमक बनाएँगे, उन्हें कोई रोक नहीं सकता । इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए वे अपने सत्याग्रही साथियों के साथ 19 मार्च 1930 ई. को दाण्डी नमक समुद्र तट पर गये । गांधीजी की यह पैदल यात्रा दाण्डीयात्रा के नाम से प्रसिद्ध है । जाते समय रास्ते में रूक रूक कर वे सभा करते थे और सत्याग्रह के उद्देश्य के सम्बन्ध में उद्‌बोधन देते थे। इस यात्रा का

एक ऐतिहासिक महत्व रहा है । केवल गुजरात ही नहीं सारे भारतवर्ष में 'लवण सत्याग्रह' को आन्दोलन का रूप दिया गया। ओड़िशा के वालेश्वर जिले के 'इंचुडी' नामक स्थान पर नमक बनाने का संकल्प लिया गया और उस समय इसका नेतृत्व लिया हरेकृष्ण महताब और सुरेन्द्रनाथ दास ने । सरकार ने तो इसे दबा देने की भरसक कोशिश की, बड़े बड़े शहरों में धारा 144 लगा दी, किन्तु असफल रही । नमक सत्याग्रह को सफल बनाने के लिए सम्बलपुर वासी उत्साह से काम करने लगे । 12 मार्च को यहाँ एक बड़ी सभा हुई । इसमें सम्मिलित होने के लिए उत्साही व्यक्तियों से निवेदन किया गया । किन्तु 18 मार्च को इस आन्दोलन के प्रमुख नेता लक्ष्मीनारायण मिश्र और भागिरथी पट्टनायक को गिरफ कर लिया गया । इसके विरोध में 12 मार्च को सम्बलपुर में एक बड़ा जन आन्दोलन खड़ा हुआ । इसके मुखिया थे नृसिंह गुरु, उन्हें भी गिरफ कर कोर्ट भेज दिया गया । सरकार चाहती थी कि लोग जैसे इंचुडी न पहुँचे । फिर भी घनश्याम पाणिग्राही के नेतृत्व में सम्बलपुर के कार्यकर्त्ताओं का एक दल वालेश्वर के सोरो तक पहुँच गया, उनके मन में किसी प्रकार का भय नहीं था और उत्साह की कमी नहीं थी ।

हरिजन कल्याण कार्य

नृसिंह गुरु यद्यपि सर्व भारतीय स्तर पर एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ के रूप में गिने नहीं जाते हैं, फिर भी दलित हरिजन वर्ग जो युगों से सामाज में दरिद्र और उपेक्षित था, उसकी सेवा एवं उत्थान के लिए नृसिंह गुरु ने सहृदयतापूर्वक जो काम किया, वह सर्वथा श्लाघनीय रहा है ।

महात्मागांधी ने राजनीतिक आन्दोलन सहित स्पृश्य-अस्पृश्य, सवर्ण-असवर्ण, ऊँच-नीच जैसे भेद भाव को दूर करने का प्रयास किया था । उनसे प्रेरित होकर नृसिंह गुरु ने भी हरिजन कल्याण का व्रत लिया। बचपन से ही दीनहीन गरीब लोगों के प्रति उनकी सहज सहानुभूति थी । अवसर आने पर सहर्ष उन्होंने इस कार्य को भी अपनाया ।

ओड़िशा में हरिजनों के संस्कार और उत्थान के लिए उस समय गोपबंधु चौधुरी के सभापतित्व में एक समिति बनाई गयी थी ।

प्रत्येक जिले में इस कार्य को सफल बनाने हेतु प्रयास किया जा रहा था । नृसिंह गुरु 1932 ईस्वी में जब जेल से खलास हुए तब गोपबंधु चौधुरी ने चन्द्रशेखर बेहेरा और नृसिंह गुरु को कटक बुलाया। तब कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने 12 रुपये चंदा दिए । बेहेरा ने भी अपने ओर से 3 रुपये मिलाकर नृसिंह गुरु को कटक भेजा । नृसिंह गुरु वहाँ जाकर प्रादेशिक हरिजन सेवक-समिति में शामिल हुए । सम्बलपुर में इस काम को आगे बढ़ाने के लिए जिला अस्पृश्यता निवारिणी समिति बनाई गयी । उसके सभापति हुए चन्द्रशेखर बेहेरा और सेक्रेटारी बने नृसिंह गुरु । गरीब हरिजनों के कल्याण साधन में नृसिंह गुरु निरलस भाव से जुड़ गये । हरिजनों के लिए चन्द्रशेखर बेहेरा ने निम्नलिखित कार्यक्रम की योजना बनाई ।

(क) हरिजनों की उन्नति के लिए धन संग्रह करना,
(ख) हरिजनों की वस्तियों को साफ करवाना,
(ग) हरिजनों के बच्चों को साफ रखवाना, उन्हें उपहार आदि देकर उत्साहित करना,
(घ) हरिजनों के साथ मिलकर हरिनाम कीर्त्तन करना,

(ङ) साधारण सभा करके उनके स्वाभिमान और साहस को बढ़ावा देना,
(च) उसके उपयोग के लिए कुआँ खोदवाना,
(छ) उन्हें मन्दिरों में प्रवेश कराना,
(ज) हरिजनों के बच्चों को शिक्षा देना आदि ।

मन में श्रद्धा और आग्रह हो तो कठिन कार्य भी सरल हो जाते हैं । तथाकथित रूढ़िवादी उच्च जाति के लोग हरिजनों के लिए इस प्रकार के सेवाकार्य को विरोध करते थे तथा उनेस मिलने जुलनेवालों के आग-पानी भी बंद कर देते थे । नृसिंह गुरु उनकी धमकी और विरोध से डरे नहीं बल्कि हरिजनों की सेवा के लिए लोगों को उत्साहित करते थे ।

ठक्कर वापा उस समय अखिल भारत हरिजन कल्याण संघ के सभापति थे । वे सम्बलपुर आये । हरिजन वस्तियों में घुमकर उन्होंने उनके किये गये कार्यों को देखकर बहुत खुश हुए । 1934 ई. में महत्मागांधी ओड़िशा आने का प्रस्ताव था । इसबार वे जैसे सम्बलपुर आयेंगे उसकी व्यवस्था ठक्कर वापा ने की थी ।

1934 मई 5 तारीख को गांधी जी ओड़िशा आये । इसबार उन्होंने सम्बलपुर से कार्यारंभ किया । झारसुगुड़ा और सम्बलपुर में दो सभाओं में उनके भाषण हुए । सभा मंच पर 198 रुपये आठ आने(पचास पैसे) के थैले की एक भेंट गांधी जी को दी गयी । सुबह सम्बलपुर में सभा हुई । सभा संपन्न होने पर गांधी जी ने कहा ''मैं हरिजनों की वस्ती देखने जाऊँगा।'' उनके साथ ठक्कर वापा और लक्ष्मीनारायण साहु आये थे । नृसिंह गुरु और उनके सहकर्मियों ने गांधीजी को ठेलकोपड़ा वस्ती ले गये । उन्होंने देखा कि उनके घर द्वार साफ थे । उन्होंने हरिवोल हुलहुली ध्वनि से देवता की तरह गांधी जी का स्वागत किया । चन्दा करके उन्होंने गांधी

जी को 60 रुपये भेंट दिए। उनके लिए किए गये कार्य कुआँ, शिक्षा देखकर गांधीजी बहुत आनन्दित हुए। पढ़-लिखकर और स्वच्छ रहकर उत्तम मनुष्य होने के लिए उन्होंने उन लोगों को उपदेश दिया।

उसी दिन अपराह्न 4 बजे एक सभा हुई। उसमें तथाकथित उच्च वर्ग के कुछ लोगों ने गांधीजी के समक्ष सवर्ण और असवर्ण स्पृश्य और अस्पृश्य के संबंध में कुछ तर्क प्रस्तुत किए। गांधी जी ने मानवता के दृष्टिकोण से उन लोगों को समझाया। सन्ध्या के समय महानदी की वालुका भूमि में बालुंकेश्वर घाट पर एक सार्वजनिक सभा हुई। इसमें गांधी जी ने कहा कि ''सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं, कोई अछूत नहीं है।'' सम्बलपुर से अनुगुल जाते समय गांधी जी ने यह भी कहा कि जहाँ से जो कुछ चंदा मिलेगा उसे वहाँ के हरिजनों की उन्नति के लिए खर्च किया जाएगा।

सम्बलपुर से प्राप्त धनराशि से एक हरिजन छात्रावास बनाने का प्रस्ताव नृसिंह गुरु ने दिया तो ठक्कर वापा ने उसका अनुमोदन किया। उसके संचालन का दायित्व भी नृसिंह गुरु को सौंपा गया। सम्बलपुर में वह छात्रावास बना और अच्छी तरह चला। 20 छात्र रहते थे। उनमें से परवर्ती समय के ओड़िशा के एक मंत्री मोहन नाग भी थे। उन्होंने उस छात्रावास के संस्मरण के साथ नृसिंह गुरु के विषय में लिखा है-''जब हम प्रत्येक दृष्टि से दलित, निष्पेषित, लांछित तथा सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वंचित थे, उस समय नृसिंह गुरु की हमारे प्रति विशेष सहानुभूति थी। उनके प्रोत्साहन, प्रेरणा और सहायता को हम भूला नहीं सकते। श्री गुरु बहुधा छात्रावास आया करते थे, प्रत्येक छात्र की सुविधा-असुविधा के प्रति ध्यान देते थे। हमारे लिए दाल-चावल आदि संग्रह करके लाते थे।

हमारे लिए वे दूसरों के पास जाकर भिक्षा माँगते थे। जरूरत होने पर अपन पैसों से वे दवात, कलम, स्याही, कागज और किताब आदि खरीदकर लाते थे। हम सब एक परिवार की तरह वहाँ रहते थे। उनसे हमने श्रम और सेवा के महत्व को समझा और सीखा। उनके कारण हमने अज्ञान-अन्धकार को हटाकर ज्ञानलोक प्राप्त किया।''

गुरु को स्मरण करते हुए उसी छात्रावास के योगेन्द्र महानन्द ने लिखा है कि गुरुजी की निर्भीक वदान्यता और सेवा परायणता अतुलनीय थी। 1942 ईस्वी की एक घटना के संबंध में वे लिखते हैं महर्षि प्रतिम आचार्य हरिहर दाश, दयानंद सतपथी और नृसिंह गुरु गंगा-यमुना-सवस्वती की तरह पवित्र त्रिवेणी संगम जैसे थे। एकदा गुरु के एक छोटे प्रकोष्ठ में बैठकर वे बात कर रहे थे तो गुरु ने कहा ''जन्म के साथ तो मृत्यु आती है, इसलिए भारत माता की आजादी के लिए मृत्युवरण करना हमारे लिए श्रेयस्कर होगा।''

एकबार की बात है जब तत्कालीन सम्बलपुर जिले के अंग्रेज डेपुटी कमिशनर लर्ड आर योबेल गुरु से मिलने आये एवं उनके कुशल-मंगल के बारे में पूछा तो गुरु ने निडर होकर कहा कि ''हम खुश कैसे रहेंगे जब तक आप लोग भारत में हैं और देश को स्वाधीन नहीं कर रहे हैं?'' उसी समय डेपुटी कमिशनर ने उन्हें राजबंदी बनाने की बात कही। तुरंत ही गुरु ने उनसे कहा ''बच्चों में अब राजबंदी हूँ और जेल जा रहा हूँ।'' वस्तुत: गुरु की वह महानता असाधारण थी।

ठक्कर वापा आश्रम में रहनेवाले पुरन्दर शासनी नृसिंह गुरु को अपने जन्मदाता पिता के समान मानते हैं। वे नृसिंह गुरु को यादकर लिखते हैं ''स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल होने के कारण मैं 1949 में मैट्रिक

परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सका । प्रतिकूल स्थिति के कारण मुझे नौकरी करनी पड़ी । 1950 में रक्लामेसन कैम्प में वार्क सरकार के पद पर दो-तीन साल तक कार्य किया । इसके बाद नृसिंह गुरु के प्रयास से मुझे पोस्ट ऑफिस में पिअन का काम मिल गया । गुरुजी का यह एहसान मेरे जीवन में अमिट स्मृति बनकर रह गई है । माता-पिता मेरे जन्मदाता थे । गुरुजी मेरे अन्नदाता, पालनकर्ता, ज्ञानदाता थे ।''

पुरन्दर शासनी ने नृसिंह गुरु को भगवान के 'नृसिंह' अवतार मानते नहीं हिचकते । गुरुजी को स्मरण कर लिखते हैं '' मुझे याद है गुरुजी के पितृश्राद्ध के समय हमारी मैस बंद होती थी । गुरुजी अपने घर में हरिजन छात्रों को भोजन कराते थे । गुरुमाँ यह सब देखकर व्यंग्य कर कहती थीं 'श्राद्ध में अच्छे ब्राह्मण बच्चे जुटे हैं ।' गुरुजी यह सुनकर थोड़ा मुस्कुरा देते थे । निर्विकार भाव से गुरुजी हमारी सेवा करते थे । गुरुजी का सत्ययुग की प्रतिष्ठा के लिए 'नृसिंह' अवतार के रूप में जन्म हुआ था कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी ।''

नृसिंह गुरु कुलीन ब्राह्मण थे । इसके बावजूद उन्होंने हरिजनों के कल्याण के लिए कार्य किया । इसके लिए उन्हें तत्कालीन समाज में लोगों की कटूक्ति भी सुनने को मिली । इसका स्मरण करते हुए श्री घनश्याम बेसन कहते हैं ''गरीबों के मसीहा स्वर्गीय नृसिंह गुरु सपरिवार गरीब छात्रों के साथ एक परिवार की तरह रहकर भरतीय परम्परा को अक्षुण्ण रखकर इस महत कार्य को आगे बढ़ाने के लिए संकल्प लिया था । वे एक नैष्ठिक, कुलीन ब्राह्मण परिवार के थे । इसलिए उन्हें तत्कालीन समाज में इस कार्य के लिए लोगों के मुख से कटूक्ति भी सुनने को मिली फिर भी अपने आदर्श से कभी पीछे नहीं हटे । बल्कि इस तूफान का सामना कर मनुष्य

समाज में स्नेह, बन्धुता एवं मैत्री की स्थापना कर एक स्वस्थ समाज गठन करने में सफल हुए।

वास्तव में इस पतित जाति को ऊपर उठाने हेतु गुरुजी ने जो उत्साह, प्रेरणा एवं उद्दीपन एवं सत्यगुणों एवं सत् शिक्षा का मार्ग चुना था । इसके लिए गुरुजी चिरकाल तक इस सम्प्रदाय के लिए स्मरणीय रहेंगे । गुरुजी हरिजन सम्प्रदाय के लिए अबुझे दीपक थे, हैं एवं रहेंगे।''

नृसिंह गुरु के साथ हरिजन कल्याण के लिए जिनका विशेष योगदान रहा वे थे सम्बलपुर के चन्द्रशेखर बेहेरा, घनश्याम पाणिग्राही, अम्बिका माधव पट्टनायक, आर्तत्राण पूजारी, नागरमल केडिया, जगन्नाथ मिश्र, महावीर प्रसाद सिंह एवं राघव जी जोशी ।

भारत छोड़ो आंदोलन और श्री नृसिंह गुरु

1942 ईस्वी अगस्त आठ तारीख के दिन महत्मागांधी ने समस्त देश वासियों को आह्वान किया और कहा ''अंग्रेजो, भारत छोड़ो'' उनके पूर्व दिन बम्बई(मुंबई) में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था, जिसमें 215 विशिष्ट कांग्रेसी नेता सम्मिलित थे । ओड़िशा के प्रतिनिधि थे हरेकृष्ण महताब, सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी, मालती देवी, प्रहलाद राय सेठ और लक्ष्मीनारायण मिश्र । वहीं महत्मा ने कहा - ''हमने बहुत कष्ट सहकर अंग्रेजों की सहायता की थी । किन्तु वे आज भी पहले की तरह हमारे ऊपर अत्याचार और शोषण करते आ रहे हैं । अब और अधिक इस शासन को हम बर्दास्त नहीं कर सकते। अब आप लोग 'करें या मरें' सिद्धान्त को अपनाए । 'करो या मरो' हमारा संकल्प है । स्वाधीनता प्राप्ति तक हमारा युद्ध चालू

रहेगा । इस स्वाधीनता संग्राम से जुड़ जाने के लिए आपको दृढ़ संकल्प लेना चाहिए ।''

महत्मा का यह आह्वान सारे भारत में क्रान्ति की ज्वाला भड़का दी। 'करो या मरो' का नारा पूरे भारतवर्ष में गुंजने लगा । अंग्रेज सरकार ने उस क्रांन्ति को दबाने की भरसक कोशिश की । अगस्त 8 तारीख को सरकार ने देशभर के अनेक बड़े बड़े कांग्रेसी नेताओं को बंदी बना लिया था । उनमें से ओड़िशा के हरेकृष्ण महताब थे । उन्हें अहमद नगर किले में रखा गया । वहीं पंडित जवाहर लाल नेहरू और सर्दार बल्लभ भाई पटेल भी बंदी थे । इस घटना के बाद सम्बलपुर में स्वाधीनता आन्दोलन जोर पकड़ने लगा । बम्बई के अधिवेशन में गये लक्ष्मीनारायण मिश्र भी गिरफ्तार हुए । यह खबर मिलते ही नृसिंह गुरु आदि स्थानीय कर्मकर्ताओं ने यहाँ भी 'करो या मरो' आन्दोलन को तेज किया । उनके साथ थे दयानन्द सतपथी, दुर्गाप्रसाद गुरु, रामरक्षा शुक्ल । आन्दोलन तीव्र हुआ, बरगढ़, झारसुगुड़ा सहित गाँव-गाँव में भी फैलता गया । पुलिस ने आन्दोलन को रोकने के लिए नृसिंह गुरु और दयानन्द सतपथी के नाम झूठा मुकदमा चलाया । भारत की सुरक्षा आइन के तहत इन दोनों को बंदी बनाया गया । जेल जाते समय नृसिंह गुरु की बेटी दिनेश्वरी को बहुत बुखार था । लोगों ने गुरु को सलाह दी कि दरखास्त देकर आठ दिन मुहलत ले लीजिए । किन्तु गुरु ने ऐसा नहीं किया । भगवान के भरोसे अपनी बेटी को उसी हालत में छोड़कर गुलामी से मातृभूमि की मुक्ति के लिए उन्होंने कारावरण किया । नृसिंह गुरु के छोटे भाई दुर्गाप्रसाद गुरु को भी जेल जाना पड़ा । दु:ख की बात है कि गुरु के जेल जाने के तीन दिन बाद उनकी बेटी हमेशा के लिए चल बसी ।

मुकदमा झूठा साबित हुआ फिर भी जेल से निकलने के बाद वे फिर से आन्दोलन करेंगे, इस भय से सरकार ने उन्हें जेल में ही नजरबंद कर लिया । 1944 ईस्वी जुलाई महीने में वे जेल से मुक्त हुए लेकिन अपनी प्यारी बेटी दानेश्वरी को देख नहीं सके । इस प्रकार अपने स्नेह और स्वार्थ को त्यागकर गुरु ने जो देश प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता । केवल गुरु ही नहीं उस प्रकार अनेक देशभक्तों ने देश मातृका के लिए असीम त्याग किया था ।

एक उत्तम कृषक

नृसिंह गुरु एक उत्तम किसान थे । ब्राह्मण घर में जन्म होने पर भी खेती के महत्व को वे अच्छी तरह समझते थे । भारतीय अर्थनीति का आधार है खेती । खेती की उन्नति न होने से भारत की जनता को न ठीक से खाना मिलेगा न कपड़ा मिलेगा । अन्न-वस्त्र और मकान मनुष्य के लिए अनिवार्य और प्राथमिक आवश्यकता है । गांधी जी का रामराज्य तभी संभव हो पायेगा जब इनका उत्पादन तथा सम्यक् वितरण होगा ।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू खेती की प्रगति के लिए वैज्ञानिकों से भी निवेदन किया था । कृषि वैज्ञानिक अधिक उत्पादन के लिए जिन-जिन नवीन कौशलों का उद्भावन करते थे, गुरु उन्हें अपने जमीन में प्रयोग करते थे । इसके बाद सफलता को लेकर अन्य खेतीहर किसानों को समझाते थे । नये किसम के बीज या बिहन को लेकर फसल उगाने से क्या क्या नयी समस्या या असुविधा उत्पन्न होती है, उसके संबंध में वे कृषि विभाग के बड़े बड़े अधिकारी और कर्मचारियों से मिलकर विचार-विमर्श के साथ साथ समाधान के उपाय बताते थे । और सम्वाददाताओं को उस विषय में सूचना देते थे। फलत: खेती करने वाले

असुविधा से वे बच जाते थे । अधिक उन्नत प्रकार की शाग-सब्जी उपजाकर वे कई वार प्रशंसित भी हुए । हीराकुद बांध निर्माण के साथ स्थानीय किसानों में यह भ्रम पैदा हो गया था कि पनबिजली के कारण उनके फसल को क्षति होगी । किसानों में फैला इस भ्रम को नृसिंह गुरु ने काफी हद तक दूर करने की कोशिश की। ग्रामीण क्षेत्र में जाकर किसानों से यह समझाते थे कि इससे कोई नुकसान नहीं होगा । इस समय किसानों में खाद के इस्तेमाल को लेकर भी भ्रम पैदा हो गया था । नृसिंह बाबू किसानों से इसबारे में समझाते थे कि खाद के इस्तेमाल करने से पैदावार बढ़ेगी । इसका उदाहरण देने के लिए स्वयं खाद का इस्तेमाल कर किसानों को दिखाते थे । एक श्रमजीवी मनुष्य की यह महानता है कि वह किसी काम को छोटा न समझे । कर्म ही जीवन है और उसके लिए सतत उद्यम की आवश्यकता है । यही प्रेरणा हम गुरु जी से प्राप्त करते हैं ।

सम्बलपुर के महत्मागांधी

1928 मसीहा दिसम्बर 21 तारीख को महत्मागांधी कलकत्ते के कांग्रेस अधिवेशन में योग देने के लिए जा रहे थे । रास्ते में दो दिन ओड़िशा में ठहरे । उस समय सम्बलपुर में कांग्रेस के नेता थे चन्द्रशेखर बेहेरा । गांधी जी के साथ थीं उनकी धर्मपत्नी कस्तूरवा, पुत्र एवं कांग्रेस दल के कई बड़े नेता थे । सब चन्द्रशेखर बेहेरा के घर रहे । उनके आतिथ्य अर्थात खाद्य पेय, सुख सुविधा का दायित्व युवक नृसिंह के ऊपर न्यस्त किया गया । वहीं वे गांधी के निकट संपर्क में आये । गांधी जी की दिनचर्या, क्रिया कलाप और व्यवहार से उन्हें बहुत कुछ सिखने को मिला । उसी दिन से वे पहनने लगे चार हाथ की खादी की धोती और दो हात की खादी कपड़े की चदर ।

इसी परिधान से वे बड़े बड़े नेताओं से मिलते थे, उन्हें कोई लाज संकोच नहीं था । दैनिक ''समाज'' के प्रतिनिधि के रूप में उन्हें अच्छा पोषाक पहनना चाहिए यह बात ''समाज'' के संपादक और मंत्री राधानाथ रथ के कहने पर भी उनमें कोई परिवर्तन नहीं आया । 'सादा जीवन और उत्कृष्ट विचार' था उनके जीवन का ध्येय और आदर्श । गांधी जी के आदर्श से वे पूरी तरह स्वदेशी भावना से अनुप्राणित रहे । विदेशी वस्तुओं को बिल्कुल त्याग दिया । पहले बताया जा चुका है कि वे चीनी नहीं खाते थे और जूता भी नहीं पहनते थे । उनके सबसे उत्तम गुण थे सरलता, निष्कपट व्यवहार, कर्त्तव्यपरायणता एवं दृढ़ मनोवल । गरीबों के प्रति उनकी विशेष समवेदना और सहानुभूति थी । वे खुद को उनके परिवार को कष्ट देकर गरीबों के लिए काम करते थे । हमेशा उनके काम के लिए प्रस्तुत रहते थे । गरीबों के लिए वे प्राय: आलोचना के शरव्य होते थे और गालियाँ भी सुनते थे, किन्तु उससे वे विचलित और विरत भी नहीं हुए ।

उनके शारीरिक गठन, वेशभूषा, चाल-चलन तथा देखकर लोग बहुधा उनकी तुलना गांधी जी से करते थे । गांधी जी के गुण और कर्मों के अनुगामी होने के कारण चन्द्रशेखर बेहेरा कहते थे यह तो पूर्ण रूप से गांधी हैं और दूसरे लोग कहते थे यह हमारे सम्बलपुर का गांधी है । आज महत्मा गांधी नहीं हैं और नृसिंह गुरु भी नहीं हैं । अब उनके समान व्यक्ति भी कहीं भी दिखाई नहीं देते हैं । उनके नश्वर शरीर तो बिलीन हो गए किन्तु उनके गुण एवं कर्म अमर ज्योति की भाँति जाज्वल्यमान रहेंगे ।

देश के स्वाधीन होने के उपरान्त हमारे भारतीय समाज की आर्थिक दशा, वर्णवैषम्य में सुधार, स्वदेशी चेतना, कुटीर शिल्प सर्वोपरि नेताओं और जनप्रतिनिधियों में सेवा परायणता, नैतिकता, भगवत् भक्ति, आस्था,

विश्वास तथा सांस्कृतिक विकास की जो परिकल्पना थी, वह अधुरी रह गयी । इसलिए गुरु बहुत दु:खी होते थे। कईबार इस लेखक से उनका साक्षात्कार हुआ तो इसबात से वे खेद व्यक्त करते थे ।

भले-हम उनके आदर्शों का अनुकरण और अनुसरण न करें लेकिन वे हमें आलोकित करते रहेंगे, इसमें दो राय नहीं है । आज जिस अनैतिक, अत्याचार, भ्रष्टाचार, आतंक, कलुषित वातावरण और पाश्चात्याभिमुखी शिक्षा, भौतिक चमक दमक से हम ग्रस्त हैं, व्याकुल हैं, त्रस्त हैं, स्वार्थ सागर में आकंठ डूबे हुए हैं, उनसे उवरने के लिए ऐसे ही व्यक्तित्व हमारे लिए प्रासंगिक और प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे ।

एक अनुकरणीय व्यक्तित्व

उनका सीधापन सात्त्विक ज्योति से उद्भासित था । एकबार श्रीमती इन्दिरा गांधी(भारत की प्रधानमंत्री) झारसुगुड़ा चुनाव प्रचार के लिए आयी थीं, तो उनके स्वागत के लिए अनेक सम्वाददाता, पत्रकार आये । जनसाधारण उनके स्वागत के लिए वहाँ उपस्थित थे । उनमें नृसिंह गुरु भी खड़े थे । श्रीमती गांधी विमान से उतरकर जब सभास्थल को जा रही थीं तो उनकी नजर गुरुजी के ऊपर पड़ी । पता नहीं उन्होंने क्या महसूस किया कि गुरुजी के पास जाकर उनके चरणस्पर्श किया। संभवत: उनमें उन्होंने महात्मागांधी को पाया । उनके वेश-भूषा और सरल व्यक्तित्व ने उन्हें प्रभावित किया । यद्यपि पहले उन्होंने कभी उन्हें नहीं देखा था फिर भी महात्मा गांधी जी के उपरान्त नृसिंह गुरु ही उनके प्रतिमूर्ति थे ।

इसी प्रकार 1983 ई. दिसम्बर 16 तारीख को जब तत्कालीन ओड़िशा के राज्यपाल श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डे बुर्ला स्थित अशोकनिवास

के एक संवादाता सम्मेलन को संबोधित करने के लिए पधारे, उस समय एक वयोज्येष्ठ संवाददाता के रूप में श्री नृसिंह गुरु प्रथम पंक्ति की कुर्सी में बैठे थे । राज्यपाल पाण्डे ने उनसे गले मिले और कुशल-मंगल की बात पूछी । पाण्डे भी एक वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी थे । किसी समय गुरु से उनका सामान्य परिचय था किन्तु उन्होंने भी अनुभव किया कि ये महात्मा गांधी के रूप में विद्यमान हैं । जबकि गुरुजी समझते थे -क्या एक राज्यपाल मुझे पहचान पायेंगे ? मानवता के संरक्षक नृसिंह गुरु का व्यक्तित्व आदर्श स्थानीय था । गांधी जी के अहिंसा और सत्यव्रत को उन्होंने व्यावहारिक रूप दिया । मानवप्रेम ही सत्य और अहिंसा का व्यावहारिक पक्ष है । केवल पुस्तकीय ज्ञान से कोई व्यक्ति महान नहीं हो सकता । इसलिए संत कबीरदास ने लिखा है –

पोथि पढ़-पढ़ जगमुआ पण्डित भया न कोइ ।
ढाई आखर प्रेम को पढ़े सो पण्डित होइ ।।

दलितोद्धार, मानवीय एकता, ऊँच-नीच की भावना से दूर रहकर सादा जीवन जीनेवाले नृसिंह के कार्य विश्व साहित्य में भले स्थान न पाये किन्तु उनकी जीवनज्योति मानव समाज 11के लिए स्मरणीय तथा प्रेरणाप्रद मानी जायेगी।

देहावसान

31मई 1983 को नृसिंह गुरु के एक साथी दयानन्द सतपथी का सदर अस्पताल में देहान्त हो गया । नमक आन्दोलन के दौरान गुरुजी दयानन्द के साथ एक साथ आन्दोलन में भाग लिया था । दोनों में पारिवारिक संबंध था । गुरुजी दयानन्द के अन्तिम दर्शन हेतु अस्पताल पहुँचे थे । उसी दिन

गुरुजी को एहंसास हो गया था उनका भी अन्तिम समय आ गया है । इसके बाद से उनका किसी भी कार्य में मन नहीं लगता था । 1 जनवरी 1984 नव वर्ष के अवसर पर सम्बलपुर जिला पत्रकार संघ की ओर से नृसिंह गुरु को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था । इस अवसर पर उन्हें सम्मानित किया गया था । इसे लेकर गुरुजी में कोई उत्साह नहीं था फिर भी समारोह में शामिल हुए । उन्होंने ही संघ की स्थापना की थी और बहुत दिनों तक उसके अध्यक्ष थे । कोशल भवन में आयोजित समारोह में उन्हें एहसास हो गया था कि उनके कर्ममय जीवन ढलान पर है । वे जीवन के संग्राम से प्रस्थान कर रहे हैं । वहाँपर उपस्थित उनके कुछ साथियों ने उनके चेहरे से यह पढ़ लिया था ।

इसके दूसरे दिन 2 जनवरी की सुबह नृसिंह गुरु अपने साले के बेटे की पत्नी के श्राद्ध में शामिल होने एक कार से अपनी बड़ी कन्या कुमुदिनी एवं जँवाई युधिष्ठिर के साथ तत्कालीन मध्यप्रदेश के सारंगगढ़ पहुँचे । ससुराल में रात को उन्हें आभास हो गया था कि उनका अन्तिम समय आ गया है । वे पूजास्थल की ओर चल दिए । उनके साथ जानेवाली उनकी बड़ी कन्या कुमुदिनी में गुरुजी माँ का रूप देखते थे। उन्होंने कुमुदिनी को बुलाकर अपना स्वास्थ्य बिगड़ने की जानकारी दी। माँ की गोद में सर रखकर भगवान की ओर देखते रहे । ठीक उसी समय उनका जीवन दीप बुझ गया । श्री अरविन्द कहते थे, ''तुम अपने को माँ के सामने समर्पित कर दो, माँ के माध्यम से तुम परमपिता परमात्मा को प्राप्त कर सकते हो।'' नृसिंह गुरु ने बड़ी कन्या कुमुदिनी में दिव्यजीवन का दर्शन किया एवं उनके सामने अपने को समर्पित कर परमात्मा के परमधाम की ओर प्रयाण कर गए । मृत्यु के समय वे 83 वर्ष के थे । नृसिंह गुरु सरल व्यक्ति तो थे ही अत्यन्त बंधुप्रेमी भी थे।

उनके मृत शरीर को 3 जनवरी की सुबह उनके सम्बलपुरस्थ निवासस्थान में लाया गया । हजारों की संख्या में लोगों ने उनके मुदीपड़ा स्थित घर जाकर अन्तिम दर्शन किए । सभी वर्ग के लोग उसमें शामिल थे जैसे - स्वाधीनता सेनानी, समाजसेवी, नेतागण, उच्चपदस्थ अधिकारी, शिक्षक, छात्र-छात्रा, किसान, मजदूर, आदिवासी-हरिजन आदि । सभी उनके वियोग में आँसू बहा रहे थे । कहा जाता है मनुष्य जन्म होते समय खुद रोता है पर महान व्यक्ति के जाते समय दूसरे लोग रोते हैं ।

नृसिंह गुरु बहुत बड़े राजनेता नहीं थे, वैभवशाली व्यक्ति नहीं थे, उच्चशिक्षित या बड़े लेखक नहीं थे, उच्च पदाधिकारी भी नहीं थे परन्तु वे एक सच्चा मानव, हृदयवान मानव, आदर्श मानव थे । मानव के लिए मानव अर्थात उदार मानव थे । उनके अन्तिम दर्शन के समय शोकाभिभूत जनता की श्रद्धांजलि ही उसका निदर्शन माना जा सकता है । यह भी सत्य है कि एक अजात शत्रु, गांधीवादीदेशभक्त, मातृभूमि का सच्चा सेवक हमेशा कीर्तिकाय में हमारा आदर्श ही बना रहेगा । ऐसे मानव के लिए राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुपत ने लिखा है-

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती,
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार के समस्त सृष्टि पूजती ।
अखण्ड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

—

डॉ. बलराम दास

जन्म - ओड़िशा के ढेंकानाल जिले के दिधि गाँव

शिक्षा - एम.ए.(हिन्दी), पीएच.डी., डी.लिट्. साहित्याचार्य, वेदान्ताचार्य

डॉ. दास वाराणसी के आदर्श श्रीरामनन्द महाविद्यालय से अध्यापन का कार्य शुरु किया । इसके बाद ओड़िशा के पुरी के सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ में कुछ वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया । 1977 से ओड़िशा सरकारी शिक्षा सेवा के तहत गंगाधर मेहेर महाविद्यालय संबलपुर से अध्यापन का कार्य शुरु किया। भुवनेश्वर के हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कुछ साल तक प्राचार्य थे । इसके बाद क्रमशः ब्रह्मपुर के विनायक आचार्य महाविद्यालय एवं राउरकेला के सुशीलावती सरकारी महिला महाविद्यालय में विभागाध्यक्ष बने । संप्रति गंगाधर मेहेर महाविद्यालय(स्वयंशासी) संबलपुर में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं । डॉ. दास भाषा आंदोलन से भी जुड़े हैं । भुवनेश्वर में स्थित ओड़िआ भाषा संस्थान के कई सालों से सभापति का दायित्व निभा रहे हैं ।

प्रकाशित पुस्तकें- ''महाभारतीय सूक्ति'',''वैष्णव मताब्जभास्कर'', ''भागवत सूक्ति सुधा'',''मानस सूक्ति संचयन(ओड़िआ अनुवाद सहित)'',''हिन्दी और ओड़िआ संत साहित्य की सामाजिक भूमिका(जगन्नाथ महाप्रभु और ओड़िआ संत भक्ति साहित्य)'' एवं ''हिन्दी और ओड़िआ भक्ति साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन'' ।

अप्रकाशित पुस्तकें- ''हिन्दी साहित्य शास्त्र और आचार्य कवि प्रताप साही'', ''हिन्दी व्यापकरण'', ''गीता का व्यावहारिक दर्शन'', ''साहित्य समीक्षा'', ''संतो की सामाजिक देन'', ''वाल्मीकि रामायण के सुभाषित संकलन(मूल श्लोक सह ओड़िआ अुनवाद)'' ।

इसके अतिरिक्त डॉ. दास के कई शोधपरक लेख, कविताएँ, कहानी और निबंध आदि प्रकाशित और कुछ अप्रकाशित हैं ।

—

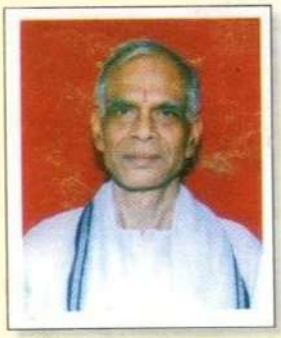

डॉ. बलराम दास

जन्म - ओड़िशा के ढेंकानाल जिले के दिधि गाँव

शिक्षा - एम.ए.(हिन्दी), पीएच.डी., डी.लिट्. साहित्याचार्य, वेदान्ताचार्य

डॉ. दास वाराणसी के आदर्श श्रीरामनन्द महाविद्यालय से अध्यापन का कार्य शुरु किया । इसके बाद ओड़िशा के पुरी के सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ में कुछ वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया । १९७७ से ओड़िशा सरकारी शिक्षा सेवा के तहत गंगाधर मेहेर महाविद्यालय संबलपुर से अध्यापन का कार्य शुरु किया । भुवनेश्वर के हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कुछ साल तक प्राचार्य थे । इसके बाद क्रमश; ब्रह्मपुर के विनायक आचार्य महाविद्यालय एवं राउरकेला के सुशीलावती सरकारी महिला महाविद्यालय में विभागाध्यक्ष बने । संप्रति गंगाधर मेहेर महाविद्यालय(स्वयंशासी) संबलपुर में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं । डॉ. दास भाषा आंदोलन से भी जुड़े हैं । भुवनेश्वर में स्थित ओड़िआ भाषा संस्थान के कई सालों से सभापति का दायित्व निभा रहे हैं ।

प्रकाशित पुस्तकें- ''महाभारतीय सूक्ति'',''वैष्णव मताब्जभास्कर'', ''भागवत सूक्ति सुधा'',''मानस सूक्ति संचयन(ओड़िआ अनुवाद सहित)'',''हिन्दी और ओड़िआ संत साहित्य की सामाजिक भूमिका(जगन्नाथ महाप्रभु और ओड़िआ संत भक्ति साहित्य)'' एवं ''हिन्दी और ओड़िआ भक्ति साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन'' ।

अप्रकाशित पुस्तकें- ''हिन्दी साहित्य शास्त्र और आचार्य कवि प्रताप साही'', ''हिन्दी व्यापकरण'', ''गीता का व्यावहारिक दर्शन'', ''साहित्य समीक्षा'', ''संतो की सामाजिक देन'', ''वाल्मीकि रामायण के सुभाषित संकलन(मूल श्लोक सह ओड़िआ अुनवाद)'' ।

इसके अतिरिक्त डॉ. दास के कई शोधपरक लेख, कविताएँ, कहानी और निबंध आदि प्रकाशित और कुछ अप्रकाशित हैं ।

Design: Gouranga-9437345200